SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 04 • JUNE 2024

हिन्दी मासिक

जून 2024

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

हर हाल में मुसलमान बन कर रहना है।

आपको इस मुल्क में हर हाल में मुसलमान बन कर रहना है। आप जानवरों और परिन्दों की तरह ज़िन्दगी नहीं गुज़ारेंगे। आप फैसला करें कि हम जहाँ भी रहेंगे आज़ादी के साथ अपने ज़मीर और अक़ीदे के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। मैं खुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि जिस दिन आपने फैसला किया कि ईमान सबसे बढ़ कर अज़ीज़ है, ईमान के बग़ैर बच्चों का जीना भी आपको पसन्द नहीं, उसी वक़्त से हालात में तब्दीली आजाएगी और कठिनाईयों के पहाड़ अपनी जगह से हट जाएंगे।

हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
ह़ज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई ह़सनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जून 2024 वर्ष 23 अंक 04

हज क्या है?

एक निश्चित और निर्धारित समय पर अल्लाह के दीवानों की तरह उसके दरबार में हाज़िर होना और उसके ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अदाओं और तौर तरीक़ों की नक़ल करके उनके सिलसिले और मसलक़ से अपनी वफ़ादारी का सुबूत देना और उन्हीं के रंग में अपने को रंगना हज की रूह और हज का मौलिक उद्देश्य है।

(हज़रत मौलाना मु0 मन्जूर नोमानी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लामी कैलेण्डर	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
हर गाम मुसाफिर पर	ताजुद्दीन अशअ़र रामनगरी	11
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
अल्लाह का ख़ौफ़	मौलाना सय्यद ज़ाफ़र मसऊद हसनी नदवी	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
इक दिन सबको जाना है	इदारा	20
ख़ानदानी विवाद	डॉ0 मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी	21
हज़रत मूसा फिरऔन के दरबार में	इं0 जावेद इक़बाल	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	26
धैर्य तथा दीन पर स्थिरता	मौलाना सय्यद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी	29
ख़ुशगवार घरेलू ज़िन्दगी	डॉ0 मुहियुद्दीन ग़ाज़ी	30
इस्लाम और पर्यावरण	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	34
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0	36
मशहूर आलिमे दीन	इदारा	37
इस्लामी दअ़वत का केन्द्र	इदारा	38
स्वास्थ्य	इदारा	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूसुफ़ः-

अनुवादः—

उन्होंने कहा इससे ख़ुदा की पनाह कि जिसके पास हमें अपना सामान मिला है हम उसके अलावा किसी और को पकड़ें, तब तो निश्चित रूप से अन्यायी ठहरेंगे(79) फिर जब वे उनसे निराश हो गये तो अलग हो कर चुपके चुपके परामर्श करने लगे, उनमें से सबसे बड़े भाई ने कहा कि तुम ख़ूब जानते हो कि तुम्हारे पिता तुमसे अल्लाह का वचन ले चुके हैं और पहले भी जो तुम यूसुफ़ के साथ कोताही कर चुके हो बस मैं तो यहां से टलने वाला नहीं यहाँ तक कि मेरे पिता ही मुझे अनुमति दें या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला कर दे और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है[1](80) अपने अब्बा के पास लौट कर जाओ और कहो ऐ अब्बा जान! आपके बेटे ने तो चोरी की और हमने वही गवाही दी जो हम जानते हैं और पीठ पीछे की ज़िम्मेदारी तो हमारी थी नहीं(81) और उस बस्ती वालों से जहां हम थे और उस क़ाफिले से जिसके साथ हम आए हैं पूछ लीजिए और हम बिल्कुल सच ही कह रहे हैं(82) कहा (नहीं) बल्कि तुमने अपनी ओर से कोई बात बना ली है तो सब्र ही बेहतर है, अल्लाह से उम्मीद है कि वह सबको हमारे पास ले आएगा बेशक वह ख़ूब जानता हिक़मत रखता है(83) और वे उनके पास से पलटे और उन्होंने कहा हाय अफसोस! यूसुफ़ पर और ग़म से उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं थी वे घुट कर रह गये(84) बेटे बोले की ख़ुदा की क़सम बस आप यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे यहाँ तक कि घुल ही जायें या जान निकल ही जाये(85) वे बोले कि मैं अपने दुःख—दर्द की फरियाद केवल अल्लाह से करता हूँ और अल्लाह की ओर से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते(86) ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई का कुछ पता लगाओ और अल्लाह की रहमत से निराश मत होना, अल्लाह की रहमत से इनकार करने वाले ही निराश होते हैं(87) फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा कि ऐ अज़ीज़—ए मिस्र हम और हमारे घर वाले बड़ी तंगी में पड़ गये हैं और हम थोड़ी सी पूंजी लेकर आए हैं तो आप हमें पूरा पूरा अनाज दे दीजिए और हम पर ख़ैरात कीजिए बेशक अल्लाह भी ख़ैरात करने वालों को बेहतर बदला देता है(88) यूसुफ़ बोल उठे क्या तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जब कि तुम अज्ञानी थे(89) वे बोल पड़े सच बताइए क्या आप ही यूसुफ़ हैं? उन्होंने कहा हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर एहसान किया है, बेशक जो भी परहेज़गारी और सब्र अपनाता है तो अल्लाह बेहतर काम करने वालों के बदले को बेकार नहीं करता(90) उन्होंने कहा कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह ही ने आपको हम पर वरीयता दी और हम ही दोषी हैं(91) उन्होंने कहा आज तुम पर कोई आरोप नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह

तो सबसे बढ़ कर दया करने वाला है[2](92) मेरे इस कुर्ते को लेकर जाओ बस मेरे पिता के चेहरे पर डाल देना वे आँखों से देखते चले आएंगे और तुम सब भी अपने घर वालों के साथ मेरे पास आ जाना(93) और जब क़ाफ़िला चला तो उनके पिता कहने लगे कि मुझे तो यूसुफ़ की खुश्बू आती है अगर तुम मुझे यह न कहो कि बड़े मियाँ सठिया गये हैं(94) वे बोले खुदा की क़सम आप उसी पुराने ग़लत आचरण पर क़ायम हैं[1](95)

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. पिता जी से सब वादा करके आए थे, इसलिए पहले तो बदले में किसी और को लेने की विनती की, जब वह स्वीकार न हुई तो मश्वरा करने बैठे, बड़ा भाई यहूदा उनमें कुछ नरम दिल था उसने कहा कि अब तो मुझे बाप के सामने जाते हुए शर्म आती है, तुम लोग जाओ सब हाल बताओ, हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम के सामने जब बात आई तो चूंकि उनको विश्वास था कि बिनयामीन चोर नहीं है इसलिए उन्होंने वही बात कही कि यह सब तुम्हारी कारस्तानियाँ हैं, उनका दिल बड़ा दुखी हुआ, यूसुफ़ अ़लैहिससलाम का ग़म भी ताज़ा हो गया, इस पर बेटों ने निंदा की तो कहा मैं तुम से फ़रियाद नहीं करता, मैं तो अपने दुख–दर्द की शिकायत अल्लाह से करता हूँ, और मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, इसमें यह संकेत भी था कि मुझे दोनों के जीवित होने का विश्वास है और मैं समझता हूँ अल्लाह फिर उनसे मिलाएगा, तुम इन चीज़ों को नहीं समझते।

2. हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलम को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़िन्दा रहने का विश्वास था, बिनयामीन भी मिस्र में थे, अनाज भी समाप्त हो रहा था, उन्होंने बेटों से कहा कि जाओ बिनयामीन की भी ख़बर लो, यूसुफ़ का भी सुराग़ लगाओ और अल्लाह की कृपा से निराश न हो, भाई रवाना हुए पहले यूसुफ़ के पास पहुंचे और अपनी मुसीबत की कहानी सुनाई कि वे नर्म पड़ें तो बिनयामीन के बारे में बात की जाए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम स्थिति सुन कर रो पड़े और सहसा जबान से निकल पड़ा कि यूसुफ़ के साथ जो तुमने किया वह याद है ? भाई समझ गए कि हो न हो यही यूसुफ़ हैं, तुरंत अपनी ग़लती स्वीकार करनी चाही, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को यह सुनना भी गवारा न हुआ, कहा वह सब छोड़ो, अब जाओ अब्बा जान और परिवार जन को लेकर आओ, यह सब्र व शिष्टाचार की अंतिम सीमा थी, खुद ज़बान पर शिकायत का एक अक्षर भी क्या लाते!

3. यह अल्लाह की शक्ति की निशानी है कि पैग़म्बरों के मोअजिज़े उनकी ओर से नहीं होते बल्कि अल्लाह के आदेश होते हैं, ढकी–छिपी बातें भी वे उतनी ही बता सकते हैं जितनी उनको अल्लाह की ओर से जानकारी मिली हो, हज़रत यूसुफ़ कुएं में रहे, मिस्र के बादशाह बने, उनके भाई कई बार आए और गये लेकिन हज़रत याकूब को कुछ पता न चला, लेकिन इधर काफ़िला मिस्र से रवाना हुआ, उधर कनआ़न में याकूब अलैहिस्सलाम को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की सुगन्ध महसूस होने लगी।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

मेहमान का इकराम (सम्मान):-

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया जो खुदा और आखिरत पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि अपने मेहमान की इज़्ज़त करे।

(बुखारी व मुस्लिम)

तीन दिन की मेज़बानी मेहमान का हक़:–

हज़रत खुवैलिद बिनअम्र (अबू शुरैह कअ़बी रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना कि जो आदमी खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है, वह अपने मेहमान का आदर करे। एक दिन और एक रात की मेहमानी तो खास तौर से करे, और पूरी मेहमानी तीन दिन की है, उसके बाद मेहमान पर जो खर्च हो वह सदक़ा है। मेहमान के लिए सही नहीं कि वह मेज़बान के यहाँ रुका रहे यहाँ तक कि उसके लिए परेशानी का कारण बन जाए।

(बुखारी व मुस्लिम)

भूखे रह कर मेहमान को खाना खिलानाः–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः आज रात इस शख्स को कौन मेहमान बनाएगा? अंसार में से एक आदमी ने कहाः ऐ अल्लाह के नबी! मैं मेहमानी कराऊँगा। और फिर उस शख्स को लेकर अपने घर गये और अपनी बीवी से पूछा तुम्हारे पास कुछ है, बीवी ने जवाब दिया– नहीं, सिर्फ बच्चों का खाना है, अंसारी ने कहा– बच्चों को किसी चीज़ से बहला दो और जब वह रात का खाना मागें तो उन्हें बहला कर सुला दो और जब मेहमान अन्दर आ जाएं तो चिराग बुझा दो, और मेहमान पर ऐसा जाहिर करो कि जैसे हम लोग भी खाना खा रहे हैं। (उन्होंने ऐसा ही किया) सब लोग बैठे और मेहमान ने खाना खा लिया और उन दोनों ने खाली पेट रात गुज़ार दी, जब सुबह हुई तो वह अंसारी अल्लाह के नबी सल्ल0 के पास आए। आप सल्ल0 ने उनसे फरमायाः रात तुम दोनों ने अपने मेहमान के साथ जो सुलूक और व्यवहार किया अल्लाह उससे बहुत खुश हुआ। (बुखारी व मुस्लिम)

ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ दूसरों को दे देनाः–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 बयान करते हैं कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ सफ़र में थे, एक आदमी अपनी सवारी पर आया और इधर–उधर देखने लगा, तो हुजूर सल्ल0 ने फरमायाः जिसके पास सवारी ज़्यादा हो वह उसको दे दे जिसके पास सवारी नहीं है, और जिसके पास सफर का सामान ज़्यादा हो, वह उसको दे दे जिसके पास सफ़र का सामान नहीं है, हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 फरमाते हैं कि आप सल्ल0 ने इस तरह से बहुत से मालों के बारे में बताया, यहां तक कि हम लोगों ने यह समझा कि ज़रूरत से ज़्यादा सामान में हम लोगों का कोई हक़ नहीं है।

(मुस्लिम)

❖❖❖

सम्पादकीय

इस्लामी कैलेण्डर का आख़िरी महीना ज़िलहिज्जा

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इस्लामी साल मुहर्रमुल हराम से आरम्भ हो कर ज़िलहिज्जा के महीने पर समाप्त होता है, जिस प्रकार ''मुहर्रम'' का महीना बहुत बरकत व फ़ज़ीलत वाला महीना है और बहुत सी ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित है उसी प्रकार ज़िलहिज्जा का महीना बहुत महत्वपूर्ण है। सबसे बड़ी और अहम बात यह है कि ''ज़िलहिज्जा'' वह महीना है जिसमें पूर्ण इस्लामी जगत के मुसलमान मक्का मुकर्रमा जा कर इस्लाम के आख़िरी और बुन्यादी रुक्न हज की अदाएगी करते हैं ''हज'' वह इबादत है जिसका ऐलान अल्लाह तबारक व तआला ने अपने सर्व श्रेष्ठ नबी हज़रत सय्यदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम द्वारा हज़ारों साल पहले करवाया वह ऐलान कुरआन के शब्दों में ''व अज़्जिन फ़िन नासे बिल हज'' में सुरक्षित है, ''लोगों में हज के फ़र्ज़ होने का ऐलान कीजिए'' यह एलान कितना शक्तिशाली और प्रभावशाली था कि दुनिया के कोने कोने में पहुँच गया कि लाखों इन्सान मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर अल्लाह के घर का तवाफ करते हैं और हज के अरकान अदा करते हैं, हज के अरकान 8 जिलहिज्जा से 13 ज़िलहिज्जा तक अदा किये जाते हैं। हज की फ़रज़ियत ज़िन्दगी में एक बार है वह केवल उन मुसलमानों पर फ़र्ज है जो साहिबे हैसियत और मालदार हैं इसकी तफ़सील आपको फ़िक़्ह की किताबों में मिलेगी, इसी ज़िलहिज्जा के महीने में हज के अलावा एक इस्लामी त्यौहार ईदुल अज़हा मनाया जाता है जिसको आम लोग ''बक़रईद'' के नाम से जानते हैं।

दो महीने पहले आपने ईदुल फ़ित्र का त्यौहार मनाया था, इस्लामी इतिहास में दो ही त्यौहार हैं, ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा।

ईदुल अज़हा के त्यौहार में दो रकअ़त नमाज़ ख़ुतबे के साथ ईदगाहों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है, नमाज़ के बाद मालदार, साहिबे हैसियत लोग जानवरों की कुरबानी करते हैं जिसकी तफ़सील निम्नलिखित हैः—

1. हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह0 के नज़दीक हर मालदार पर कुरबानी वाजिब है।
2. अहनाफ़ के नज़दीक हर मुस्लिम मालदार पर कुरबानी के तीन दिनों में कुरबानी करना वाजिब है, अगर कोई मालदार शख़्स जिस पर कुरबानी वाजिब है, कुरबानी के दिनों में जानवर की क़ीमत सदक़ा करदे तो कुरबानी का वुजूब उससे ख़त्म न होगा। उस पर कुरबानी वाजिब रहेगी।

ज़कात के निसाब के मुकाबिले में कुरबानी के निसाब में थोड़ी तफ़सील हैः—

जो मुसलमान मर्द हो या औरत साढ़े बावन तोला चाँदी यानी लगभग 612 ग्राम चाँदी पर मिलकियत रखता है या उतनी नक़दी रखता है जिससे 612 ग्राम चाँदी खरीद सके उस पर कुरबानी वाजिब है यहाँ ज़ेवर पहनने वाली औरतों से बड़ी ग़लती होती है, वह 612 ग्राम चाँदी बल्कि उससे ज़्यादा की मालिक होते हुए कुरबानी करने में कोताही करती हैं।

अगर कोई मुसलमान, घर के ज़रूरी सामान और सम्पत्ति के अलावा ऐसी चीज़ पर मिलकियत रखता है जिससे 612 ग्राम चाँदी खरीदी जा सके उस पर भी कुरबानी वाजिब है।

अगर किसान है और उसके यहां इतना ग़ल्ला होता है कि जिससे साल भर की ख़ुराक़ फ़राहम हो जाए उस पर भी कुरबानी वाजिब है।

मुसाफ़िर पर कुरबानी नहीं चाहे वह मालदार हो, अलबत्ता मुसाफिर अगर कहीं 15 दिन ठहरने का इरादा करे और उसी बीच कुरबानी के दिन आ जाएं तो उस पर कुरबानी वाजिब होगी।

जिस पर कुरबानी वाजिब है उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी ओर से उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार भी कुरबानी करदे तो वाजिब अदा न होगा, इस पर ध्यान देना ज़रूरी है।

कुरबानी के दिनों में हर साहिबे निसाब को चाहिए कि वह पहले अपनी वाजिब कुरबानी करे उसके बाद ही किसी और की तरफ़ से नफ़िल कुरबानी करे।

अगर कोई शख़्स मालदार है और उसके कई बेटे और बेटियाँ और बहूवें हैं, तो उनमें जो भी 612 ग्राम चाँदी या उसके बराबर रूपये की मिलकियत रखता है उस पर भी कुरबानी वाजिब होगी सिर्फ़ घर के मालिक की कुरबानी से उन लोगों के ज़िम्मे से कुरबानी पूरी न होगी।

कुरबानी का जानवर सेहतमन्द हो, बेऐब हो अगर बीमार हो या ज़्यादा दुबला हो या कोई ऐब हो तो किसी आलिम से उसके बारे में मालूम कर लें। अहनाफ़ के नज़दीक कुरबानी का समय बक़रईद की नमाज़ के बाद से 12 ज़िलहिज्जा के सूरज डूबने तक है।

मुस्तहब है कि कुरबानी का गोश्त एक तिहाई गरीबों में बाँट दें, एक तिहाई अज़ीज़ व अक़ारिब को पेश करें और एक तिहाई अपने घर वालों के लिए रखें, लेकिन अगर कोई शख़्स सब का सब अपने घर वालों को खिला दे तो कोई हरज नहीं।

कुरबानी संबंधित एक अहम और ज़रूरी मसअलाः—

बाज़ जगह रिवाज है कि बड़े जानवर में सिर्फ़ छः लोग शरीक होते हैं उसमें एक नाम हुजूर सल्ल0 का होता है, ज़ाहिर में बड़ा अच्छा अमल है, लेकिन सातवें हिस्से में बाक़ी छः के हिस्से साझे के होते हैं, सभी उलमाए अहनाफ़ ने लिखा है कि ऐसी सूरत में किसी की भी कुरबानी अदा न होगी, हुजूर सल्ल0 वाले हिस्से में साझा न हो बल्कि उसकी अदाइगी कोई अकेला शख़्स करे तब कुरबानी जाएज़ होगी। तकबीर तश्रीक़ "अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला—इलाह—इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द" यह कलिमात 9 ज़िलहिज्जा की फ़ज्र की नमाज़ से 13 ज़िलहिज्जा की अस्र की नमाज़ तक पढ़े जाएंगे।

कुरबानी की हक़ीकतः—

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपके सहाबा ने दरयाफ़्त किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 कुरबानी की हक़ीक़त क्या है? आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम्हारे बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत और यादगार है। फिर सहाबा किराम ने अर्ज़ किया फिर हमारे लिए इसमें क्या अज्र व सवाब है? फ़रमाया जानवर के हर बाल के बदले एक नेकी नाम—ए—आमाल में लिखी जायेगी।

मालूम हुआ कि कुर्बानी हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह की यादगार और मिल्लते इस्लामिया का अहम शिआर (निशानी) है, इसका अज्र सवाब असीमित और बहुत ज़्यादा है, चुनांचि नबी करीम सल्ल0 का इरशाद है कि कुरबानी के दिनों में कुरबानी से ज़्यादा कोई चीज़ अल्लाह को पसन्द नहीं, उन दिनों में यह नेक काम सब नेकियों से बढ़ कर है, कुर्बानी करते वक़्त ख़ून का जो कतरा ज़मीन पर गिरता है वह ज़मीन तक पहुँचने से पहले ही अल्लाह की बारगाह में मक़बूल हो जाता है तो पूरी ख़ुश दिली के साथ कुरबानी किया करो, एक मौके पर आप सल्ल0 ने फ़रमाया कुर्बानी के जानवरों को खिला पिला कर खूब मज़बूत और ताक़तवर किया करो, क्योंकि पुल सिरात पर वह तुम्हारी सवारी होगा। गुंजाइश और हैसियत होने के बावजूद कुरबानी न करने वालों पर हदीस में सख़्त नाराज़गी भी है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया जिसके पास गुंजाइश हो और उसके बावजूद कुरबानी न करे वह हमारी ईदगाह के क़रीब भी न आये।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद 10 साल तक मदीन–ए–मुनव्वरह में क़याम फ़रमाया, हर साल पाबन्दी से कुर्बानी फ़रमाते थे, और मुसलमानों को इसकी ताक़ीद फ़रमाते थे, कुरबानी की अहमियत व हक़ीक़त और फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि आप सल्ल0 ने कुरबानी के तमाम अहकाम को खोल–खोल कर बयान फ़रमा दिया, जो हदीस की किताबों में पूरे तौर पर मौजूद है इसी बिना पर उम्मत के जमहूर उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि कुर्बानी वाजिब है।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

हर गाम मुसाफिर पर नाज़िल अल्लाह की रहमत होती है

—ताजुद्दीन अशअ़र रामनगरी

कुछ दिल की लगन काम आती है, कुछ रब की इनायत होती है।
तब बन्द—ए—मोमिन को हासिल तैबा की ज़ियारत होती है।।

आराम की ख्वाहिश कौन करे तकलीफ़ भी राहत होती है।
दिन यादे खुदा में कटता है, शब वक़्फे इबादत होती है।।

अल्लाह ग़नी हज का यह सफ़र, दिल ही रहरो, दिल ही रहबर।
हर गाम मुसाफिर पर नाज़िल अल्लाह की रहमत होती है।।

एहराम को ज़ेब तन करके जब सू—ए—हरम बढ़ते हैं क़दम।
उस वक़्त दिले दीवाना की क्या कहिए जो हालत होती है।।

अल्लाह रे ज़मज़म का पानी दुनिया में नहीं जिसका सानी।
दिल को भी तरावट मिलती है तन की भी तहारत होती है।।

वह शहरे मदीना क्या कहना, जलवों का ख़ज़ीना क्या कहना।
अनवार के बादल घिरते हैं और बारिशे रहमत होती है।।

जब रौज—ए—अक़दस के आगे आँखों में छलक आयें आँसू।
तब लालोगुहर से बढ़ कर हर क़तरे की क़ीमत होती है।।

जब सीने में दिल की हर धड़कन देती है सदा—ए—सल्लेअला।
उस वक़्त मुहब्बत को हासिल मेराजे मुहब्बत होती है।।

सौ बार भी गर प्यासी आँखें लें गुम्बदे ख़ज़रा के बोसे।
हर बार निगाहों को हासिल इक ताज़ा लज़्ज़त होती है।।

महबूबे खुदा की कुरबत में थक हार के जब नींद आ जाये।
सोया हुआ रहता है इंसान, जागी हुई क़िस्मत होती है।।

क्या इक बेचारा अशअर ही महरूमे करम रह जायेगा।
देखो इन प्यासी आँखों की कब पूरी हसरत होती है।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

जन्नत :-

अनुवादः— *"(हाँ) निश्चित रूप से जिन्हों ने माना और अच्छे काम किये उनके लिए मेहमानी को फिरदौस की जन्नतें होंगी, हमेशा उसी में रहेंगे, उसे छोड़ कर कहीं जाना न चाहेंगे"* ।

जन्नत वो खुशियों की और सिर्फ खुशियों की जगह है, जो ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों को नसीब होगी, जिसका ऐश हमेशा का और जिसका आनंद व खुशी हर तरह की तकलीफ से बिल्कुल खाली है, और जो उसमें एक बार दाखिल हो जाएगा, वो हमेशा के लिए वहीं का हो कर रह जाएगा न वो निकाला जाएगा और न वो निकलना चाहेगा,वहाँ नेमतों में ऐसी भिन्नता और ऐसी बहार होगी कि हर नेमत एक नई बहार लिए हुए आएगी, वहाँ किसी क़िस्म का न कोई खौफ होगा न डर, और न आपसी रंजिश की कोई संभावना, जन्नत में हर दाखिल होने वाला अपनी मसर्रतों और कभी न खत्म होने वाली खुशियों में ऐसा मस्त होगा जिसकी कल्पना भी इस दुनिया में मुमकिन नहीं, मतलब ये कि ये ऐसी बादशाहत होगी, जिसका खयाल दुनिया के बड़े बड़े बादशाह को भी न हो सका,वहाँ आदमी जो चाहेगा वो उसको मिलेगा, जिस चीज की इच्छा होगी वो वहाँ मौजूद पाएगा।

दुनिया में हर फूल के साथ कांटे हैं, हर रौशनी के साथ अंधेरा है, हर वजूद के साथ खात्मा है, न जाने कितने गम सहने के बाद खुशी का मंजर सामने आता है, और अभी संतुष्टि भी नहीं होती कि उसका खात्मा हो जाता है, जन्नत को अल्लाह ने खुशी व मसर्रत का ऐसा कभी न खत्म होने वाला ठिकाना बनाया है, जिसमें गम व तक्लीफ का कोई गुजर नहीं "तो उनके लिए न ख़त्म होने वाला बदला है" ।

(सूरः अल—तीन— 6)

कुरआन मजीद की जबान में वो "जंनातुन नईम" (जन्नत के बाग) भी है, "जंनतुल खुल्द" (हमेशा बाकी रहने वाला बाग) भी है, "जन्नातु अदन" (हमेशा रहने के बाग) "दारुल खुल्द" भी है और "दारुस्सलाम" (सलामती का घर) भी है ।

वहाँ का हमेशा रहना और बाकी रहना और वहाँ के नेमतों की निरन्तरता और जन्नतियों का वहाँ हमेशा हमेश उनमें रहना ऐसी मजबूती के साथ कुरआन मजीद में बयान किया गया है कि उसमें जरा भी संदेह बाकी नहीं रह जाता, वहाँ की नेमतों के निरन्तरता का जिक्र निम्नलिखित आयतों में देखें—

अनुवादः— *"और ऐसी जन्नतें कि जिसमें उनके लिए हमेशा की नेमतें हैं"।*

(अल—तौबा :21)

अनुवादः— *"उसके फल भी सदा (बहार) हैं और उसका साया भी"। (अल—रअदः35)*

अनुवादः—*"और बहुत से फलों में, जो न खत्म होने को आएंगे और न उनमें कोई रोक टोक होगी"।*

(अल—वाक़ियहः 32—33)

अनुवादः— *"सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और उन्हों ने अच्छे काम किए तो उनके लिए न खत्म होने वाला बदला है।" (अल—तीनः 6)*

अनुवादः— *"जन्नती जो इन नेमतों में होंगे उनके हमेशा हमेश रहने का जिक्र बार बार इन अल्फाज में आया है" वो हमेशा उसी में रहेंगे"।*

(अल—निसाः 57)

एक जगह इर्शाद हैः

अनुवादः— *"वो सिवाय पहली मौत के फिर वहाँ मौत का मजा न चखेंगे"।*

(अल—दुखानः 56)

एक हदीस में आता है कि जब जन्नती जन्नत में जा चुकेंगे

तो मौत को एक मेंढ़े की शक्ल में लाया जाएगा और जबह कर दिया जाएगा, और ऐलान हो जाएगा कि अब मौत को मौत आ चुकी है, अब किसी को मौत आने वाली नहीं, जन्नतियों को इस हमेशा की जिंदगी से बहुत खुशी होगी। (सुनन तिरमिजीः 2755)

अब आखिरी बात ये होगी कि जन्नती न वहाँ से निकाले जाएंगे, और न वो वहाँ से निकलना चाहेंगे, इसी सूरत के बारे में इर्शाद होता है–

अनुवादः– *"न वहाँ थकन का नाम होगा और न ही वो वहाँ से निकाले जाएंगे"।*

(अल–हिज्रः 48)

और दूसरी सूरत के बारे में इर्शाद हुआ कि–

अनुवादः– *"हमेशा उसी में रहेंगे, उसे छोड़ कर कहीं जाना न चाहेंगे"। (अल–कहफः108)*

वहाँ की बेइंतिहा नेमतों का नक्शा इन आयतों में खींच दिया गया है–

अनुवादः– *"बस अल्लाह उनको उस दिन की बुराई से बचा लेगा और उनको ताजगी और खुशी आता करेगा, और उनको उनके सब्र के बदले में बाग और रेशम से नवाजेगा, वो उनमें आराम से मसहेरियों पर तकियों से टेक लगाए होंगे, वहाँ न उनको धूप की तपिश से पाला पड़ेगा न सख्त सर्दी से, और उन पर बागों के साए झुके पड़ रहे होंगे और उनके गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे,और उन पर चांदी के बर्तनों और शीशे के प्यालों के दौर चल रहे होंगे, शीशे भी चाँदी के जिनको कारीने से उन्हों ने ढाल होगा, और वहाँ उनको ऐसे जाम पिलाये जाएंगे जिस में अदरक मिली होगी, वहाँ के ऐसे चश्मे से जिसका नाम सलसबील होगा, और उनके सामने सदा बहार लड़के आ जा रहे होंगे, जब उनको आप देखेंगे तो लगेगा कि जैसे बिखरे हुए मोती हों, और जब आप देखेंगे तो उस जगह आपको नेमतों की एक दुनिया और बड़ी बादशाहत नजर आएगी, उन पर बहुत महीन घने रेशम का लिबास होगा और उनको चाँदी के कंगन से सजाया जाएगा और उनको उनका रब पाकीजा शराब पिलाएगा, ये है तुम्हारा बदला, और तुम्हारी मेहनत रंग लाई है"। (अल–दहरः 11–22)*

तिरमिजी शरीफ की एक हदीस में आता है–

अनुवादः– "हज़रत मुगीरा बिन शोबा (रज़ि0) से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार से पूछा कि ऐ परवरदिगार! जन्नत वालों में सबसे कम रुतबे वाला कौन होगा, फरमायाः वो शख़्स जो जन्नत वालों के जन्नत में दाखिल हो जाने के बाद आखिर में आएगा, तो उससे कहा जाएगा कि जन्नत में दाखिल हो जाओ, वो कहेगा कि अब मैं कहाँ जाऊंगा, कि लोग अपने अपने मकाम पर जा चुके, और अल्लाह की नवाजिशों पर कब्जा कर लिया, उससे कहा जाएगा कि क्या तू इस पर राज़ी है कि तुझे वो मिले जो दुनिया के बादशाहों में से किसी के पास न था, अर्ज करेगा खुदावंदा मैं राजी हूँ, अल्लाह फरमाएगा तेरे लिए उतना और उससे दो गुना और उससे तीन गुना और चार गुना है, कहेगा खुदावंदा मैं राजी हो गया, खुदा फरमाएगा तेरे लिए वो और उसका दस गुना है, अर्ज करेगा मैं राजी हो गया, फरमाएगा उसके साथ ये भी कि जो तेरा दिल आरजू करे और जो तेरी आँख को लज़्जत बख़्शे"।

(सुनन तिरमिजी, जिल्दः 2/155, हदीस न0 3502)

हासिल ये कि जन्नत वालों को वो मिलेगा जिसका जिक्र इस हदीस में है कि–

अनुवादः– "जो न आँख ने देखा, न कान ने सुना, और न दिल पर उसका खयाल गुज़रा"।

(सुनन तिरमिजीः 3501)

यह सब नेमतें अल्लाह के उन बन्दों को हासिल होंगी जो अल्लाह के मानने वाले हैं, सच्चा ईमान रखने वाले और अच्छे काम करने वाले हैं।

❖❖❖

अल्लाह का ख़ौफ़ और हज के आदाब

मौलाना सय्यद ज़ाफ़र मसऊद हसनी नदवी

रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ें, साल में महीने भर के रोज़े, एक साल पूरा होने पर माल के चालीसवें हिस्से की ज़कात, हैसियत होने पर हज की अदाएगी, यह इस्लाम के वह चार स्तम्भ हैं जिन पर इस्लाम की इमारत स्थापित है। कलम–ए–शहादत का जिक्र नहीं यह तो इन बुन्यादों की भी बुन्याद है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमायाः इस्लाम की बुन्याद पाँच चीज़ों पर है–

1. दिल से इस बात का इक़रार करना और ज़बान से इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाएक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।
2. दिन में पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ना।
3. मालदारों के लिए ज़कात देना।
4. मालदारों के लिए हज करना।
5. रमज़ान के रोज़े रखना।

हज, इस्लाम का वह स्तम्भ है जिसने अपनों को ही नहीं गैरों को भी प्रभावित किया है, उसके जाहिरी फ़ाइदे, सामूहिक नीतियाँ, आध्यात्मिक दृश्य पर इस्लामी जगत ही नहीं गैर इस्लामी जगत ने सैकड़ों नहीं हज़ारों बार रश्क किया और क्यों न करे, त्यौहार वह भी मनाते हैं, यात्राएं उनकी भी निकलती हैं, नुमाइशें प्रदर्शनी उनके यहाँ भी लगती है, मेलों ठेलों का सिलसिला उनके यहाँ भी चलता है, भीड़ उनके यहां भी नज़र आती है, पूजा पाठ उनके यहां भी होते हैं, धार्मिक स्थलों पर हाजिरी उनके यहां भी दी जाती है, लेकिन क्या कहीं कोई जोड़ नज़र आता है, उनमें से किसी चीज़ का हज के दिनों से, हज के सिद्धान्तों से, मिना के क़ियाम से, अरफ़ात की हाजिरी, और वहां अपने गुनाहों पर रोने और अल्लाह से माफ़ी मांगने से, मुज़दलफ़ा की रात से, दस, बीस नहीं चालीस चालीस लाख लोगों की एक साथ मुनतक़ली से, काबे के साये में पढ़ी जाने वाली नमाज़ से, हजरे असवद को बोसा देने की बेक़रारी से, रौज़–ए–अक़दस पर पढ़े जाने वाले दुरूद व सलाम से और गुम्बदे खज़रा को देख कर दिल पर पड़ने वाले असरात से?

हाजी के दिल की कैफ़ियात को छोड़िये उसके जज़बात और एहसासात को भी जाने दीजिए, वह तो खुदा के अलावा कोई जान नहीं सकता, हाजी उसी खुदा का तो मेहमान है, हाँ आप उसके ज़ाहिर पर ज़रूर नज़र डाल सकते हैं और उससे उसकी अन्दरूनी कैफ़ियात का अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

आप नज़र डालिए एहराम की सफ़ेद उजली चादर पर, चादर के अन्दर, छिपे हाजी के पाक साफ़ जिस्म पर, उसके लरज़ते होंठों से निकलते तलबिये (लब्बैक) के अलफ़ाज़ पर, दुआ के लिए उठे उसके कपकपाते हाथ पर, दुआ के वक़्त ख़ुदा और उसके बन्दे के बीच स्थापित सम्बन्ध पर आह व बुका के साथ मांगी जाने वाली दुआ पर जो केवल अपने लिए नहीं, अपने बेटों के लिए नहीं, अपने रिश्तेदारों के लिए नहीं, अपने मुसलमान भाईयों के लिए बल्कि पूरी इन्सानी दुनिया के

लिए जो दुनिया से जा चुके हैं उनके लिए भी और जिनको आना है उनके लिए भी, क्या इसकी मिसाल किसी मज़हब में, किसी मज़हबी मौक़े पर किसी मज़हबी जंगह पर मिलती है, यक़ीनन हाजी मेहमान है, ख़ुदावन्द कुद्दूस का, आइए अब देखें उस मेहमानी के आदाब क्या हैं?

1. ख़ुदा के उस मेहमान को पहला जो हुक्म ख़ुदा की ओर से मिलता है वह यौन इच्छा की बातों की मुमानियत का है। हज के अवसर पर जाएज़ शहवानी ख़्यालात भी ज़बान पर न लाए जाएं, यह हुक्म कुरआन में स्पष्ट रूप में दिया गया है।

2. दूसरा हुक्म अल्लाह की ओर से छोटे बड़े तमाम गुनाहों से बचने का है। रोज़े की तरह एहराम की हालत में बहुत से जाएज़ काम नाजाएज़ हो जाते हैं, जैसे शिकार करना, जुएं मारना, दरख़्त की पत्ती तोड़ना, तो फिर छोटे या बड़े गुनाह की गुन्जाईश हज के मौक़े पर कहाँ से निकल सकती है वह तो साधारण दिनों में भी हराम था, हज के दिनों में तो उसकी हुरमत और बढ़ जाती है।

3.तीसरा हुक्म ख़ुदा के घर के मेहमान को वाद विवाद से बचने का है, मारपीट हाथापाई तो अलग रही, ज़बानी बहस तकरार जिसकी सम्भावना भीड़ के इस अवसर पर बहुत बढ़ जाती है, हज के दिनों में खास तौर पर इसको सख़्ती से मना किया गया है।

4. चौथा हुक्म जो हाजी को इस अवसर पर अल्लाह की ओर से मिलता है वह अल्लाह से डरते रहने का है, क्योंकि यही वह डर है जो, उसको काम वासना की बातों से बचाएगा, गुनाहों से सुरक्षित रखेगा, और वादविवाद, बेकार बातों से दूर रखेगा।

5. पाँचवा हुक्म जो हज की आयतों के अन्तर्गत बार बार हाजी को दिया गया है वह है अल्लाह को याद करने और उसके एहसानात को ज़िक्र करने का, जिस अल्लाह ने आपको हज की तौफ़ीक़ दी, और वहाँ तक पहुँचने के साधन दिए, सफ़र को आसान किया, रुकावटों को दूर किया गुनाहों में लतपत शरीर को अपने पवित्र घर में हाज़िरी की इजाज़त दी, अवज्ञाकारी के बावजूद अपना मेहमान बना कर सम्मान दिया, उस ख़ुदा का ख़्याल हर समय दिल में रहे, उसका ज़िक्र हर समय ज़बान पर रहे, उसके अलावा किसी की याद न आए। न उसके अलावा ज़बान पर किसी का ज़िक्र आये, न उसके अलावा दिल में किसी का ख़्याल आए।

आखिरी बात मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0 की ज़बानीः–

''हज के मौक़े पर दुनिया के कोने कोने की आबादियाँ खिंच कर आ जाती हैं, हर क़िस्म हर उम्र, हर मिजाज के लोग होते हैं, बूढ़े भी जवान भी, बच्चे भी, बड़े भी, तेज़ मिजाज भी और गुस्सावर भी, आवारा मिज़ाज भी, लालची और हरीस भी, ख़ूबसूरत और नौजवान औरतें भी, फिर तकलीफ़ और परेशानियाँ भी सवारी के सिलसिले में तरह तरह की पेश आती हैं इसके अलावा विभिन्न भाषा में बात करने वाले लोग, वह उनकी नहीं समझते यह उनकी नहीं समझते, बड़े बड़े सहनशील और धैर्यवान लोग अपने ऊपर नियंत्रण नहीं कर पाते और सब्र का दामन उनके हाथ से छूट जाता है ईर्ष्या, छल कपट, बद नज़री और बदकारी, वादविवाद के मौक़े क़दम क़दम पर रखे होते हैं''।

शेष पृष्ठ ...19..पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन औलिया की उदारताः–

अमीर खुसरो को यह उदारता हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के प्रशिक्षण और साथ में रहने से प्राप्त हुई। जिनके यहाँ अल्लाह के बन्दों को कष्ट पहुँचाना और दिल दुखाना सबसे बड़ा नैतिक पाप और अपराध था। हज़रत ख़्वाजा स्वयं भी हिन्दुओं की कुछ बातों को देख कर प्रभावित हो जाते, एक दिन वह अपनी खानक़ाह से बाहर अमीर खुसरो के साथ निक़ले तो यमुना के किनारे हिन्दू औरतें और मर्द स्नान कर रहे थे, उनको देख कर हज़रत ख़्वाजा ने फ़रमयाः

हर क़ौम रास्त राहे, दीन–ए–व क़िब्ला गाहे

अर्थात ''हर क़ौम का अपना धर्म और एक केन्द्र (क़िब्ला) होता है।''

हज़रत ख़्वाजा ब्राह्मणों की कुछ विशेषताओं को भी स्वीकार करते थे। उनके चहेते ख़लीफ़ा अमीर हसन देहलवी (मृ0 1335 ई0) उनके कथनों को लिखा करते थे, जो फ़वायदुल फ़वाद के नाम से अबतक बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय है। वह भी अमीर खुसरो की तरह शाही दरबार से जुड़े रहे। वह लिखते हैं कि एक बार उनको शाही दरबार से कुछ दिनों तक वज़ीफा नहीं मिला जिससे वह परेशान थे। हज़रत ख़्वाजा को उनकी परेशानी मालूम हुई तो अमीर हसन को यह शिकायत सुनाई कि एक शहर में एक ब्राह्मण रहता था, उसके पास बड़ी दौलत थी लेकिन उस शहर के शासक ने उस पर जुर्माना करके उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिससे वह नष्ट–विनष्ट होकर बहुत ही ग़रीब हो गया। एक दिन वह कहीं जा रहा था कि उसको एक दोस्त रास्ते में मिला। उसने ब्राह्मण से पूछा, तुम्हारा क्या हाल है? ब्राह्मण ने उत्तर दिया, अच्छा है और खुश हूँ। दोस्त ने कहा कि तुम्हारी चीज़ें तो तुमसे ले ली गईं, अब तुम खुश कैसे रह सकते हो। ब्राह्मण ने उत्तर दिया, मेरा जनेऊ तो मेरे पास है।

हज़रत ख़्वाजा ने यह कहानी सुना कर अमीर हसन से कहा, ''तुमने सुना'' अमीर हसन ने उत्तर दिया, जी हाँ, इस कहानी से मुझको बहुत आन्तरिक शान्ति मिली और तसल्ली हुई।

हसन देहलवी की उदारताः–

अमीर हसन देहलवी के दीवान (कविता संग्रह) में बहुत सी ऐसी कहानियाँ पद्य के रूप में लिखी हैं जिनसे अनुमान होता है कि वह अपने धर्म वालों को उदारता और विशाल हृदयता की शिक्षा देते रहे। एक कविता में लिखते हैं कि एक नाव पर एक ग़ैर मुस्लिम (गब्बर) और 99 मुसलमान सवार थे, अचानक नाव नदी में डूबने लगी। मुसलमानों ने कहा कि हम तो अल्लाह तआला के प्रकाश से परिचित हैं लेकिन किसी बेगाने के कारण यह नाव डूब रही है। इसलिए इस गब्बर को दरिया में डाल कर नाव को बचा लेना चाहिए। गब्बर ने यह सुना तो निराश हो कर एक आह भरी और बोला कि एक गब्बर के दुर्भाग्य के प्रभाव से विपत्ति आ रही है और नाव डूब रही है तो

फिर 99 ईमानवालों की पवित्रता से यह सुरक्षित क्यों नहीं है। उनमें एक समझदार बुजुर्ग भी थे। गब्बर की यह दर्दनाक बात सुनकर प्रभावित हुए और अपने साथियों को नसीहत की कि हर हालत में अल्लाह तआला की खुशी और मदद पर भरोसा करना चाहिए। इसके बाद नाव सुरक्षित रही। अन्त में अमीर हसन लिखते हैं कि अल्लाह तआला के साम्राज्य में सर देने में ही सर का सम्मान है और दूसरों के पाप पर ध्यान देना ठीक नहीं। हर हाल में अल्लाह से भलाई और अँधेरों के चिराग़ की रोशनी में अल्लाह की कृपा की आशा रखनी चाहिए। अमीर हसन देहलवी ने इस घटना को पद्य का रूप दिया है।

हसन देहलवी ने एक ग़ैर मुस्लिम की दानशीलता का विवरण बहुत प्रभावी शैली में लिखा है। यह ग़ैर मुस्लिम मोहताजों की सहायता करने में बहुत प्रसिद्ध था। एक ग़रीब उसके पास उस समय पहुँचा जब वह युद्ध के मैदान में घायल हो कर दम तोड़ रहा था। ग़रीब ने उसके पास आकर अपनी दशा के बारे में बताया तो उसने कहा, अब तो उसके पास कुछ भी नहीं रहा। उसके दाँतों से सोने की डोरी निकाल कर अपनी ज़रूरत पूरी कर सकता है, हसन देहलवी इसे भी पद्य के रूप में बयान करते हैं।

शेख़ अहमद अब्दुल हक़ की उदारता की कहानीः—

धार्मिक उदारता का एक अच्छा उदाहरण पण्डवा (बंगाल) के एक मुसलमान शासक के यहां भी मिलती है, जिसको शेख़ अब्दुल कुद्दूस गंगोही रह0 ने शेख़ अहमद अब्दुल हक़ के कथनों के सम्बन्ध में बयान किया है। शेख अहमद अब्दुल हक़ सूफ़ीवाद में सुलूक के मार्ग की मंज़िलें तय करने के लिए बंगाल जा कर पण्डवा में ठहरे तो उस ज़माने में वहां का एक शासक एक रात भेष बदलकर शहर में निकला। एक जगह क़लन्दरों का एक समूह खाना खा रहा था। शासक उनके पास पहुँचा तो उन्होंने उसको फटकारा कि तुम हमारे खाने में नज़र लगा रहे हो उसने अपनी ग़रीबी का हाल बयान किया तो वह और क्रोधित हुए और जब तक उसको अपने सामने से हटा न लिया। चुप नहीं हुए। शासक वहां से एक ऐसी जगह पहुंचा जहां कुछ जोगी रहते थे। वह लोग भी खाना खा रहे थे, आपस में बराबर बाँटने लगे तो एक हिस्सा शासक को भी दिया। शासक ने कहा, मैं एक अजनबी आदमी हूँ, मेरे लिए इसका हिस्सा क्यों लगाते हो। जोगी बोले हमारा तरीक़ा यही है। अगर कुत्ता मौजूद होता है तो हम उसको भी बराबर का हिस्सा देते हैं। तुम तो आदमी हो तुमको कैसे न दें। शासक यक सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। सवेरा हुआ तो उसने आदेश दिया कि सारे क़लन्दर और दरवेश शहर से निकाल दिए जाएं। जोगी जैसे थे वैसे रहने दिए गये। शहर में हंगामा हो गया। शेख़ अब्दुल हक़ शहर छोड़ना नहीं चाहते थे। वह शासक के दरवाज़े पर जाकर बैठ गये। किसी ने उनको वहां से नहीं हटाया तो यह कह कर अपने आवास पर वापस आ गये कि वह शासक दरवेशों को नहीं बल्कि अज्ञानियों को शहर से निक़लवा रहा है।

बहमनी वंश के संस्थापक की कहानीः—

उदारता का एक बहुत अच्छा उदाहरण दकन के बहमनी सल्तनत के संस्थापक सुल्तान अलाउद्दीन हसन गांगू बहमनी (मृ0 357 हि0) के यहां भी मिलती है, उसका आरम्भिक जीवन बहुत ही ग़रीबी में गुज़रा।

वह दिल्ली में मुहम्मद तुग़लक की शहज़ादगी के ज़माने में उसके एक नक्षत्र ज्ञानी गंगू ब्राह्मण का नौकर था। अपनी ग़रीबी से परेशान रहता। एक दिन उसने गंगू ब्राह्मण से अपनी ग़रीबी का बयान किया तो गंगू ब्राह्मण ने हमदर्दी में दिल्ली के निकट उसको अपनी एक बन्जर ज़मीन का एक टुकड़ा दिया। एक जोड़ी बैल और दो मजदूरों की भी व्यवस्था कर दी ताकि वह उस ज़मीन पर खेती करके अपना पेट पाल सके। एक दिन उसके मजदूर हल चला रहे थे कि ज़मीन के अन्दर से एक बर्तन निक़ला जिसमें सुल्तान अलाउद्दीन खिलज़ी के शासनकाल की अशर्फियां थीं। हसन अपनी ईमानदारी के कारण यह सहन न कर सका कि स्वामी की दी हुई ज़मीन में खयानत करे। उसने यह सारी दौलत गंगू ब्राह्मण के सामने ले जाकर रख दी। गंगू ने हसन की ईमानदारी का उल्लेख शहजादा मुहम्मद तुग़लक से किया। उसने अपने पिता सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक को इसकी सूचना दी। सुल्तान ग़यासुद्दीन ने हसन को अपने पास बुलाया और राजसी उपकारों के साथ अपने सरदारों के वर्ग में सम्मिलित कर लिया।

एक दिन गंगू ब्राह्मण ने हसन से कहा कि मुझको तुम्हारे भाग्य के पत्री से ऐसा मालूम होता है कि तुम बड़े भाग्यशाली आदमी हो। अल्लाह की मदद और उपकार से किसी ऊँचे पद पर पहुँच जाओगे। इस बात का वादा करो कि यदि अल्लाह तुमको किसी बड़े पद पर पहुँचा दे तो मेरा नाम भी अपने नाम का हिस्सा बना लेना ताकि तुम्हारे सौभाग्य की बदौलत मैं दुनिया में जीवित रह सकूँ, दूसरे यह कि अपने ख़ज़ाने में मुझको और मेरी सन्तान के सिवा कसी और को न रखना। हसन ने अपने उपकारी की दोनों बातें स्वीकार कर लीं और कोई बड़ा पद पाने से पहले ही अपने नाम के साथ गंगू लिखने लगा। वह दकन में बहमनी सल्तनत स्थापित करने के बाद बहुत सफल शासक और विजेता सिद्ध हुआ। एक बार किसी ने उससे पूछा, आपने इतनी बड़ी सल्तनत कैसे प्राप्त कर ली और इतने कम समय में अपने शासन क्षेत्र को इतना अधिक कैसे फैला लिया और दूसरे शासकों और प्रजा को अपना आज्ञाकारी कैसे बनाया। उसने उत्तर दिया, पहले तो मैंने मुरव्वत को अपना उसूल बनाया, बड़ों और छोटों से हमेशा मुरव्वत का व्यवहार करता रहा, दूसरे यह कि कभी कंजूसी से काम नहीं लिया। दानशीलता में दोस्त और दुश्मन का भेद नहीं किया, प्रत्येक के साथ अच्छा व्यवहार किया, इन्हीं दोनों की वजह से सभी मेरे शुभचिन्तक हमदर्द और आज्ञाकारी बनते गये।

बौद्धिक उदारताः–

बौद्धिक उदारता देश के विभिन्न कोनों में लगातार जारी रही जैसे बंगाल में बंगाली भाषा अवश्य बोली जाती थी लेकिन रामायण और महाभारत जैसे क्लॉसिकल साहित्य से उनकी भाषा परिचित नहीं थी। मुसलमानों का शासन वहां स्थापित हुआ तो उन्होंने न केवल बंगाली भाषा सीखी बल्कि उसको समृद्ध बनाने की पूरी कोशिश की। सुल्तान नासिरशाह (1282–1325 ई0) बंगाली भाषा का बड़ा संरक्षक था। महाकवि विद्यापति ने अपनी एक कविता उसके नाम समर्पित करके उसकी ख्याति को अमर रखा है। उसी के आदेश से महाभारत का बंगाली

अनुवाद हुआ। सुल्तान हुसैन शाह ने मालाधर बसु को भागवत पुराण के बंगाली अनुवाद के लिए नियुक्त किया। हुसैन शाह के सेनापति पुरगुल के आदेश से गोविन्दराय परमेश्वर ने महाभारत का दूसरा अनुवाद आरम्भ किया। जिसे श्रीकरन नंदी ने आगे बढ़ाया। आगे चलकर तो बंगाली भाषा मुसलमानों की मातृभाषा हो गयी और उन्होंने इसमें अनगिनत किताबें लिखीं।

प्रतिष्ठित सूफ़ियों ने भी हिन्दुस्तान के दिलों को जीतने के लिए यहां की भाषाएं सीखीं और उनमें दोहे कहे। हज़रत फरीदुद्दीन गंजशकर (मृ0 1265 ई0) की पंजाबी कविताएं अबू अली क़लन्दर पानीपती (मृ0 1323 ई0) हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनीरी (मृ0 1380 ई0), हज़रत अब्दुल हक़ रूदौलवी (मृ0 1330 ई0) और हज़रत अब्दुल कुद्दूस गंगोही (मृ0 1537 ई0) शेख़ बरनावी के हिन्दी दोहे और कविताएं आज कल की हिन्दी भाषा के शोधकर्ताओं के लिए ध्यान देने योग्य हो गयी हैं। दकन में ख़्वाजा गेसू दराज़ (मृ0 1432 ई0) ने मेराजुल आशिक़ीन और शाह मीरान शमसुल उश्शाक (मृ0 1422 ई0) ने खुशनामा, खुश नग्ज़ और शहादतुल हक़ीकः दकनी भाषा में लिख कर यह सूर फूँका कि मुसलमान फ़ारसी भाषा छोड़ कर यहां की स्थानीय भाषा को अपनाएं। प्रतिष्ठित सूफ़ियों ने यहां के वासियों से अधिक निकट होने के लिए फ़ारसी और अरबी भाषाओं को छोड़ कर जिस तरह इनकी भाषा अपनायी और उससे उर्दू की जो उन्नति हुई, वह न केवल निष्पक्षता बल्कि भारत की धार्मिक और भाषाई इतिहास का स्थायी अध्याय बन गई है।

.....जारी.....

❖❖❖

पृष्ठ....15...का शेष

ऐसे मौक़े पर अगर कोई चीज़ आपके सफ़र को कामयाब और आकपे हज को अल्लाह के नज़दीक मक़बूल बना सकती है तो वह यही अल्लाह का डर है, उसकी याद और उसका ज़िक्र है। शहवानी ख़्यालात और बातों से बचना, गुनाहों से दूर रहना, वादविवाद और ज़बानी झगड़ों से अपने को बचाना, जिस्म और एहराम की पाकी के साथ–साथ हमको ज़बान भी पाक रखनी है, दिल भी पाक रखना है, ख़्यालात भी पाक रखने हैं तब ही हम हज से इस तरह गुनाहों से पाक व साफ़ हो कर लौटेंगे जिस तरह माँ के पेट से गुनाह की आलाइश (मलीनता) से पाक बच्चा पैदा होता है।

हज का यह सफ़र उम्र में एक ही दो मरतबा पेश आता है, बकिया तीन अरकान, रोज़ा, नमाज़, ज़कात, अगर उम्र ने वफ़ा की, सेहत व तनदुरुस्ती ने साथ दिया और ''सोर्स ऑफ इनकम'' ने धोखा न दिया तो इन तीनों अरकान की अदाएगी के मौके ज़िन्दगी में बार बार आएंगे लेकिन इस चौथे रुक्न की तलाफ़ी का इमकान बहुत कम बाक़ी रहता है, क्योंकि सब कुछ होते हुए भी इन्सान बाज़ वक़्त हज की सआदत से महरूम रह जाता है, अगर अल्लाह के फ़जलो करम से हज की सआदत का मौक़ा आप को मिल रहा है तो उसके आदाब शिष्टाचार का पूरा ख्याल रखिए नियतों को ठीक रखिए और अल्लाह की रज़ा प्रसन्नता के अलावा किसी और चीज़ का ख़्याल दिल में हरगिज़ हरगिज़ न लाइये और मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के सम्मान का पूरा लिहाज़ रखिए।

❖❖❖

इक दिन सबको जाना है

—इदारा

हम प्रदेसी तुम प्रदेसी, सारा जग बेगाना है।
कौन रहा है कौन रहेगा, इक दिन सबको जाना है।।

रहा न रुस्तम, रहा न दारा, मौत ने आख़िर सबको मारा।
दुनिया है दो दिन की यारो, जीवन है एक बहती धारा।।

सोच ज़रा इस जग में पगले क्या है हमारा, क्या है तुम्हारा।
पल दो पल के सब हैं साथी, पल दो पल का खेल है सारा।।

झूठे हैं सब रिश्ते नाते, यह दिल को समझाना है।
हम प्रदेसी तुम प्रदेसी, सारा जग बेगाना है।।

दौलत पर इतराना कैसा, ताक़त पर इठलाना कैसा।
ये सब हैं इक पल के साथी, झूटी शान दिखाना कैसा।।

है ये जवानी ढलता सूरज, शरमाना बलखाना कैसा।
दे दिया धोखा जब बचपन ने, हो के जवाँ इतराना कैसा।।

उम्र की कोई कैद नहीं है, साँस रुकी बस जाना है।
हम प्रदेसी तुम प्रदेसी, सारा जग बेगाना है।।

तुमने जो ये महल बनाया, दौलत का अम्बार लगाया।
उल्टे सीधे ढोंग रचा कर धर्म का धन्धा खूब जमाया।।

अरमानों का ख़ून बहा कर दौलत लूटी जश्न मनाया।
धन के अन्धे समझ न पाए, कौन है अपना कौन पराया।।

शीश महल से तुमको निकल कर मिट्टी में मिल जाना है।
हम प्रदेसी तुम प्रदेसी, सारा जग बेगाना है।।

नाज़ाँ ये तुम सबसे कह दो, दुनिया की हर शै है फ़ानी।
दुनिया का दस्तूर यही है, ये दुनिया है आनी जानी।।

मन मानी की रीति ग़लत है, क्यों करते हो तुम नादानी।
बचपन की हो शाम सुहानी, हो चाहे वह मस्त जवानी।।

साँसों का जब रिश्ता टूटा, पंछी को उड़ जाना है।
हम प्रदेसी तुम प्रदेसी, सारा जग बेगाना है।।

❖❖❖

ख़ानदानी विवादः कारण और हल

डॉ0 मुहम्मद रज़ीउल इस्लाम नदवी

सुखी ख़ानदान बहुत खुशनसीबों को मिलता है। वरना आए दिन देखने में आता है कि निकाह के थोड़े समय बाद ही खानदान के लोगों में खटपट शुरु हो जाती है, शिकायतें होने लगती हैं और विवाद और झगड़े सर उभार लेते हैं। फिर या तो इसी तरह रंजिशों, मतभेद और विवाद और झगड़े के साथ ज़िन्दगी के दिन गुज़रते रहते हैं, या अलग होने की नौबत आ जाती है। फिर अलग होना भी सही ढंग से नहीं होता, बल्कि थाना पुलिस और कोर्ट कचहरी की नौबत आ जाती है। एक मौक़े पर मुझसे ख़्वाहिश की गई कि ''खानदानी विवाद और झगड़ेः कारण और हल'' के विषय पर बात करूँ, तो मैंने नीचे दर्ज प्वाइंट पर बात–चीत की।

1). निकाह का एक अहम मक़सद शादीशुदा ज़िन्दगी में सुकून है। खानदान के सभी लोगों को यह मक़सद सामने रखना चाहिए और उन बातों, कामों और हरकतों से बचने की कोशिश करनी चाहिए जिनसे घर का सुकून ग़ारत हो जाता है।

2). खानदान में नस्बी रिश्तेदार भी होते हैं और ससुराली रिश्तेदार भी। मियाँ–बीवी को चाहिए कि दोनों को समान अहमियत दें।

3). विवाद और झगड़े पैदा हों तो सबसे पहले उनके कारणों को तलाश कर के उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। नीचे कुछ कारणों की निशानदही की जा रही है और उनका हल भी बताया जा रहा है। इन पर अमल किया जाए तो ज़िन्दगी सुखी हो सकती है।

4). मियाँ–बीवी को जल्दी से जल्दी इस हक़ीक़त को कुबूल कर लेना चाहिए कि आदर्श की तलाश बेकार है। कोई आदमी प्रफेक्ट नहीं। जो जैसा है, वैसे ही उसे कुबूल करने और इसके साथ ऐडजस्टमेंट करने की कोशिश करनी चाहिए।

5). निकाह के बाद पुरानी मुहब्बत को भूलना लाज़िम है। मुम्किन है, लड़का पहले किसी और लड़की से मुहब्बत करता हो और उससे निकाह करना चाहता हो। इसी तरह लड़की का दिल किसी और लड़के के साथ लगा हो। लेकिन निकाह के बाद सुखी शादीशुदा ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए जरूरी है कि दोनों अपनी मुहब्बत का मर्कज़ अपने जोड़े को बनाएं।

6). नाशुक्री का इज़हार सुखी संबंधों में बड़ी खराबी पैदा करता है। आम तौर पर लड़कियों/औरतों की ओर से इस का इज़हार होता है। शौहर ने ज़िन्दगी भर बीवी का ख़याल रखा हो लेकिन किसी एक मामले में उससे कुछ कोताही हो जाए तो बीवी उसे ताना देने लगती है कि आपने मेरे लिए किया ही क्या है? इससे शौहर का दिल दूर होने लगता है। हर हाल में शुक्रगुज़ारी का जज़्बा पैदा करना और उसका इज़हार करना शादीशुदा ज़िन्दगी को सुखी बनाता है।

7). गुस्से के बेजा इज़हार से शादीशुदा ज़िन्दगी में कड़वाहट पैदा होती हैं। बीवी से लाख कोताहियां हों, लेकिन शौहर को चाहिए कि वह गुस्से पर क़ाबू रखे और माफ़ कर देने का रास्ता अपनाए।

8). रिश्तों का एहतिराम न करने से दिल फट जाते हैं, फिर उन्हें रफू करना मुम्किन नहीं होता।

कुरआन व हदीस में रिश्तों के एहतिराम का हुक्म दिया गया है। शौहर और बीवी दोनों को अपने ससुराली रिश्तेदारों का एहतिराम करना चाहिए। शौहर को बीवी के सामने उसके रिश्तेदारों की बुराई नहीं करनी चाहिए, इसी तरह बीवी को भी ससुराली रिश्तेदारों का ख़्याल रखना चाहिए।

9). शादीशुदा ज़िन्दगी में विवाद और झगड़े का एक बड़ा कारण बर्दाश्त न करना है। मियाँ–बीवी को संयम और बर्दाश्त की आदत डालनी चाहिए। दूसरे की कोई बात नागवार हो तो तुरंत उस पर अपने रद्दे–अमल का इज़हार नहीं करना चाहिए। बेकाबू ज़बान फ़साद की जड़ होती है, जब कि बर्दाश्त की आदत बहुत से फ़ित्नों को जड़ से उखाड़ देती है।

10). बहुत से विवाद और झगड़े खुदगर्जी से पैदा होते हैं। खुदगर्जी आम ज़िन्दगी में पसंदीदा नहीं और शादीशुदा ज़िन्दगी में तो और भी घातक है। मर्द हो या औरत, उसे कुरबानी देने वाला बनना चाहिए। खुद ज़हमत और तकलीफ़ उठा कर खानदान के दूसरे लोग को आराम पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए।

11). खानदान के बहुत से विवाद और झगड़े लगाई बुझाई से भड़कते हैं। कोई किसी के पीछे बुराई करे तो उसे तुरंत रोक देना चाहिए और कह देना चाहिए कि इस्लाम ने इस की इजाज़त नहीं दी है।

12). संबंध बिगड़ रहे हों तो आगे बढ़ कर उन्हें सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। हदीस में उस आदमी को अफ़ज़ल कहा गया है जो संबंध सुधारने में पहल करे।

13). ग़लती किसी से भी हो सकती है शौहर से, बीवी से, सास से, दूसरे खानदान के लोगों से भी। कोई ग़लती हो जाए तो उसे कुबूल कर लेने में देर नहीं लगानी चाहिए, बल्कि तुरंत उसका सुधार करना चाहिए। माफ़ी मांग लेने और *Sorry* कह देने से कोई छोटा नहीं हो जाता, बल्कि दूसरे की निगाह में उस का क़द और ऊँचा हो जाता है और इससे मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है।

14.) सास को माँ जैसा एहतिराम और बहू को बेटी जैसा प्यार दिया जाए तो खानदान में सास बहू के झगड़े पैदा ही नहीं होंगे। इस सिलसिले में सासों को बड़प्पन का मुज़ाहरा करना चाहिए। उनको मेरी नसीहत है कि प्यार बाँटें, मुहब्बत और एहतिराम मिलेगा। मॉफ़ करें, खिदमत मिलेगी। बहू के कामों में ऐब मत निकालें, तन्कीद न करें, बल्कि उसे सँभलने का मौक़ा दें और समय समय पर उस की तारीफ करें। ऐसा करने से यक़ीनी तौर पर घर का माहौल सुखी रहेगा।

15). बहुत से खानदानी विवाद और झगड़े कौंसलिंग से हल किये जा सकत हैं। कौंसिलर्स की ज़िम्मेदारी है कि वह विवाद और झगड़े के शिकार खानदान के लोगों में अल्लाह और रसूल की इताअत का जज़्बा उभारें, हुकूक़ व फ़राइज़ दोनों बताएं, इस्लामी क़ानून और इस्लाम की अख़्लाक़ी तालीम दोनों बताएं और बेहतर रवैया अपनाने की तलक़ीन करें।

खुलासा यह कि विवाद और झगड़े पैदा होने की सूरत में आपसी समझौता मसलों का बेहतरीन हल है। अल्लाह तआला ने फरमाया है कि अगर मियाँ–बीवी और खानदान के लोग सुलह–समझौता करना चाहेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें उस की तौफ़ीक देगा। (अन्निसाः 35) अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन!

❖❖❖

हज़रत मूसा फिरऔन के दरबार में

(बच्चों के लिए कुरआन के प्रकाश में, रोचक अंदाज में)

इं0 जावेद इक़बाल

पत्नी के साथ वतन लौटते समय अल्लाह तआला ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को दो चमत्कार दियेः–

1. लाठी को धरती पर डालते ही अजगर के रूप में बदल जाना और दूसरे हाथ बगल में डाल कर बाहर निकालते ही चमकता हुआ ट्यूब लाइट के समान बन जाना। यह दो चमत्कार दे कर आदेश दिया कि ऐ मूसा फिरऔन के पास जाओ वह बहुत घमंडी और अत्याचारी हो गया है, चारों ओर उसने आतंक मचा रखा है, जाओ और उसे हमारी बंदगी की ओर बुलाओ। हजरत मूसा बोले ऐ मेरे रब कुछ समय पूर्व मेरे हाथ से अंजाने में एक किब्ती (सूर्यवंशी) की हत्या हो गई थी मुझे डर है वह मुझे देखते ही सूली पर चढ़ा देगा, इसके अलावा मेरी ज़बान में हकलाहट है, मैं स्पष्ट शब्दों में बात नहीं कर पाता इसलिए आप मेरे भाई हारून को मेरा सहयोगी बना दीजिए तब हम दोनों मिलकर आपके आदेश का पालन भली भांति कर सकेंगे।

अल्लाह ताला ने मूसा अलैहिस्सलाम की बात मान ली और उनके भाई हारून को उनका सहयोगी बना दिया।

अब हजरत मूसा अपने वतन मिस्र पहुंचे, अपने भाई हारून को साथ लिया और फिरऔन के दरबार में जा धमके। वह फिरऔन के महल में ही पले बढे थे, फिरऔन के दरबार में उसके दरबारियों की गोदों में खेले थे, उन्हें वहाँ जाने में न कोई संकोच हो सकता था और न ही कोई उन्हें रोक टोक सकता था। दरबार में पहुँच कर वे दोनों ही सीधे फिरऔन की ओर बढ़ते चले गए, आज उनकी चाल में एक नए अंदाज का वकार था। लगभग दस वर्ष बाद हजरत मूसा इस दरबार में आए थे। इस अवधि में हत्या का आरोप उन पर सिद्ध हो चुका था।

सामान्य परिस्थितियों में यही आशा की जा सकती थी कि वह बादशाह के सामने जा कर क्षमा याचना करेंगे। मगर यह क्या, सभी दरबारी यह देख कर दंग रह गए कि हजरत मूसा ने फिरऔन के न चरण छुए, न ही क्षमा याचना की बल्कि दो टूक शब्दों में अल्लाह का पैग़ाम फिरऔन के सामने रख दिया। उन्होंने कहा कि ऐ बादशाह धरती और आकाश का सर्वशक्तिमान मालिक और रचयिता एक ही है, वही सृष्टा है, वही पालनहार है, वही मारता है वही जिलाता है हम सब उस के बंदे हैं, हम सब को उसी के पास लौट कर जाना है। उसके पास सभी के कर्मों का लेखा जोखा (*record*) मौजूद है। उसी के अनुसार ही वह प्रत्येक का निर्णय करेगा। निर्णय के दिन का भी वही अकेला मालिक है, उसके सामने किसी की कोई सिफारिश काम न आएगी। प्रत्येक व्यक्ति को उस रब की ही बंदगी करना चाहिए। सो तू भी उसी की बंदगी कर और लोगों को अपने सामने झुकने पर मजबूर मत कर।

हज़रत मूसा की तकरीर सुन कर फिरऔन क्रोधित हो उठा, अहंकार भाव से पैर पटकते हुए गरजा– मूसा तेरा यह साहस कि मेरे ही दरबार में मुझे ही उपदेश दे रहा है। तू अपना वह समय भूल गया जब तुझे हमने दरिया से निकाला था, अपने महल में तुझे पाला था, जवानी तक तू ने हमारे महल और दरबार में हर तरह का सुख भोगा, खूब ऐश किया तरह तरह के पकवान खाए और फिर मेरे ही एक सेवक की हत्या कर के भाग गया। आज तेरी यह हिम्मत

कि मुझ ही को उपदेश देने चला आया।

हज़रत मूसा ने बिना किसी भय और क्रोध के, शांतिभाव से गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया कि तुम मेरे पालन पोषण का एहसान जताते हो मगर अपने अत्याचारों को भूल जाते हो। तुम यह नहीं सोचते कि तुमने हजारों इस्राईली बच्चों की हत्या करवाई थी।

यदि तुम ने इस्राईली बच्चों की हत्या का आदेश जारी न किया होता तो मेरी माँ मुझे दरिया में न डालती। दूसरे यदि तुम निःसंतान न होते तो मेरे पालन–पोषण का विचार भी मन में न लाते। तुम मुझे महल में ऐश करने का ताना देते हो मगर यह नहीं सोचते कि जो कुछ भी हुआ तुम्हारे जुलमों के कारण और खुदा की योजना के अनुसार हुआ। तुम ने मेरी पूरी क़ौम के साथ जानवरों जैसे व्यवहार किए बल्कि तुम ने उन्हें जानवरों से भी गया गुज़रा समझा, तुम ने उनसे गधों घोड़ों की भांति काम लिया, अपमान जनक कार्यों पर उन्हें मजबूर किया मगर कभी उनके मानवीय अधिकारों पर ध्यान नहीं दिया। उनके ख़ून पसीने की मेहनत पर ख़ुद ऐश किए, अपने और अपनी कौम के लिए शानदार महल और कोठियाँ बनवाईं मगर बनी इस्राईल को झोपड़पट्टी में भी चैन से नहीं रहने दिया। उनके हजारों बच्चों को मौत के घाट उतारा और अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए एक बच्चे का पालन–पोषण किया तो उसके लिए एहसान जताते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। रहा सूर्यवंशी की हत्या का मामला, उसका मैं दोषी कहा जा सकता हूँ मगर मैंने उसे जान बूझ कर नहीं मारा, संभवतः वह उस की मृत्यु का निश्चित समय रहा होगा, जब मैं ने झगड़ा समाप्त कराने के मक़सद से उसे घूँसा मारा था। मगर अब वर्तमान में मेरे रब ने मुझे अपना संदेश वाहक चुना है और सीधा सच्चा रास्ता दिखाया है।

हज़रत मूसा की तक़रीर सुन कर सभी दरबारी स्तब्ध रह गए। फिरऔन की समझ में न आया कि इन सच्ची पक्की बातों का क्या जवाब दे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आज उसे दर्पण में ख़ुद उसका जालिम चेहरा दिखा दिया था। कुछ देर शांत रह कर फिरऔन बड़ी चालाकी से बोला तुम जिस रब का घड़ी घड़ी नाम लेते हो, और जिस की भक्ति का तुम मुझे सबक़ पढ़ाने आए हो वह कौन है? जरा मुझे समझाओ तो। हजरत मूसा ने कहा वह सर्वशक्तिमान (रब) धरती आकाश और इनके बीच जो कुछ भी है उन सबको बनाने वाला है वही सबका पालनहार है, उसकी सत्ता चारों ओर फैली हुई है, कोई उसकी पकड़ से बाहर नहीं है, सृष्टि की प्रत्येक रचना उसके नियंत्रण में है, उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी हिल नहीं सकता, सारांश यह कि वह हम सब का रब है, पालनहार है। यह सुनकर फिरऔन का क्रोध और बढ़ा उसने अनुमान लगाया कि कुछ दरबारी भी मूसा की बातों से प्रभावित हो रहे हैं। अतः उसने राजनैतिक चाल चलते हुए दरबारियों का ध्यान हजरत मूसा की बातों से हटाना चाहा और अपने मंत्रियों को संबोधित करते हुए बोला– सुनते हो मूसा क्या कह रहा है– इस से पहले कि कोई कुछ बोलता हजरत मूसा बोल पड़े वह मालिक तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब है। यह सुनकर फिरऔन गुस्से से चीख़ पड़ा ''ऐ लोगो यह व्यक्ति जो स्वयं को संदेशवाहक बता रहा है दीवाना पागल है''। हज़रत मूसा अलै0 फिरऔन के गुस्से की परवाह किए बिना आगे बोले, वह रब सृष्टियों का पालनहार है, पूर्व और पश्चिम का नियंत्रणकर्ता है। फिरऔन हजरत मूसा की जबान से बार बार रब और पालनहार सुन सुन

कर पागल हुआ जा रहा था। उसे डर था कि उसके दरबारी मूसा की बातों से प्रभावित होकर मूसा के पक्ष में न हो जाएं। उसने पहले तो स्वयं ही रब का परिचय पूछा था मगर अब हजरत मूसा की जबान से रब का स्पष्ट वर्णन सुनकर भयभीत हो रहा था। यही कारण था कि अपने भय को क्रोध के पीछे छुपाते हुए विषय बदल कर बोला, मूसा! जरा उन क़ौमों के बारे में अपने विचार भी तो बताओ जो पिछले जमाने में गुजर चुकी हैं। इस प्रश्न के पीछे फिरऔन का मकसद यह था कि मूसा यदि गुजरे जमाने के लोगों को गुमराह कहेंगे तो उसके दरबारी भी मूसा के विरोधी बन जायेंगे क्योंकि यह उनके पूर्वजों का अपमान होगा। और यदि मूसा उन पूर्व कालीन लोगों को सत्य मार्ग पर चलने वाला कहेंगे तो मैं उनकी बात का यह कहकर खंडन करूंगा कि वह सत्यमार्गी कैसे कहे जा सकते हैं जबकि उनकी पूजा का तरीका तुम्हारे बयान के विरुद्ध था।वे लोग भी मूर्तियों की पूजा करते थे। यदि वे लोग तुम्हारी नजर में सत्यमार्ग पर थे तो हम भी सत्यमार्ग पर ही हैं, तुम अब हमें सत्यमार्ग का पाठ क्यों पढ़ा रहे हो। साफ नजर आ रहा है कि आम लोगों के भले बुरे का अधिकार मेरे हाथ में है, मैं जिसे चाहूं उपहारों से लाद दूं और जिसे चाहूं जेल में सड़ा दूं या फिर जिन्दा ही जला दूं। इसीलिए तो मैं स्वयं को पालनहार घोषित करता हूं, इस में क्या गलत है। यह सोच कर मन ही मन अपनी चालाकी पर हंस रहा था कि उसने मूसा को कैसा फंसाया है, अब तो चित भी मेरी और पट भी मेरी है। मगर हजरत मूसा अल्लाह के सच्चे रसूल थे। सच्चा रसूल उतनी ही बात करता है जितना उसे अल्लाह की ओर से सिखाया जाता है, उसके अतिरिक्त किसी अन्य बात से अनभिज्ञता व्यक्त करने में सच्चे रसूल को कोई संकोच नहीं होता। हजरत मूसा एक सच्चे रसूल थे उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि इस बारे में मुझे कोई ज्ञान नहीं, इस बारे में मेरा रब ही ठीक ठीक जानकारी रखता है, वह न गलती करता है न कुछ भूलता है। हजरत मूसा ने फिरऔन की उम्मीद के ख़िलाफ फिर रब का नाम लिया। फिरऔन रब की चर्चा सुनते सुनते ऊब चुका था क्रोध से उसका शरीर तप रहा था और हजरत मूसा थे कि बोले चले जा रहे थे। मेरा रब वही है जो न ग़लती करता है न भूलता है, मेरा रब वही है जिसने यह धरती बनाई, इस में पेड़ पौधे उगाए फिर इस में चलने फिरने के रास्ते बनाए, नदियां और झरने बनाए, उस रब ने आकाश को छत का रूप दिया, सितारों से उसे सजाया। उस रब ने सूरज और चांद को बनाया, आकाश से पानी को बरसाया खेतियां उगाईं, बागों में फल लगाए, मेरा रब बहुत महान है। फिरऔन इन बातों को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, यह बातें उसकी अपनी नीतियों के विरुद्ध थीं, वह तो स्वयं अपनी ख़ुदाई का दावेदार था, यह बातें उसकी ख़ुदाई का इन्कार करने का खुला चौलेंज थीं।

फिरऔन के राज्य में किसी को उसकी ख़ुदाई का इन्कार करने की इजाज़त नहीं थी। सोचो कि हजरत मूसा अलै0 की बातों से फिरऔन का क्या हाल हुआ होगा। वर्तमान में अपने चारों ओर नजर डाली जाए क्या किसी में साहस है कि अपने राजा या शासक की नीतियों के विरुद्ध, ख़ुद उसके सामने उपस्थित हो कर, उसकी मुख़ालिफ़त कर सके। फिरऔन हजरत मूसा की सच्ची पक्की बातों का जब कोई जवाब न दे सका तो उसने धमकी देते हुए कहा ऐ मूसा यदि तुम मेरे अलावा किसी अन्य को रब मानोगे और मेरी ख़ुदाई का इन्कार करोगे तो

शेष पृष्ठ ...29..पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः हाजियों को छोड़ने उनके रिश्तेदार और दोस्त अहबाब स्टेशन और हज हाउस तक जाते हैं, इसी प्रकार वापसी के समय इस्तिक़बाल के लिए एयरपोर्ट तक आते हैं, इनमें मर्द व औरत सब होते हैं, क्या शरीयत की नज़रत में यह दुरुस्त है?

उत्तरः हाजियों को हज हाउस छोड़ने और लेने जाना दोनों शरीयत की नज़र में सही और दुरुस्त है बल्कि सवाब का ज़रिया है, इमाम गज़्ज़ाली रह0 ने अपनी किताब, अहयाउल उलूम में हज़रत हसन रज़ि0 की यह रिवायत नक़ल की है कि जब हाजी हज के लिए जायें तो उनको छोड़ने के लिए जाओ और उनसे दुआ–ए–ख़ैर की दरख़्वास्त करो और जब हज से वापस आ जायें तो उनसे मिलो और मुसाफा करो इससे पहले कि वह दुनिया के कामों में लग कर गुनाहों में लिप्त हों इसलिए कि उनके हाथों में बरकत है, आप सल्ल0 ने दुआ में फरमायाः ऐ अल्लाह! तू हाजियों और उन लोगों की मग़फिरत फरमा जिनके लिए हाजी तुझसे मग़फिरत की दरख्वास्त करें।

(मजालिसुल अबरार 145)

प्रश्नः एक बीमार व्यक्ति ने अपना फर्ज हज अपने एक दोस्त से हज्जे बदल के तौर पर कराया, उनको यह अंदाज़ा था कि अब मैं स्वस्थ नहीं हूंगा, अल्लाह के करम से दो तीन साल के इलाज के बाद अब वह स्वस्थ हो गये, अब प्रश्न यह है कि क्या उसका हज हो गया या उसके जिम्मे में बाक़ी है?

उत्तरः हज बदल की शर्तों में यह है कि उसका उज्र पूरी ज़िन्दगी बाकी हो, अब जब कि वह स्वस्थ हो गये हैं तो उनको स्वयं हज करना ज़रूरी है, हज बदल उनके लिए काफी नहीं रहा, हाँ पहले हज कराने का सवाब उनको ज़रूर मिलेगा।

(रद्दुल मुहतारः 238/2)

प्रश्नः क्या औरत हज बदल में जा सकती है? एक औरत अपनी माँ की ओर से हज बदल करना चाहती है, क्या इसकी गुंजाइश है?

उत्तरः औरत के साथ उसका शौहर या कोई महरम हो तो औरत भी हज बदल में जा सकती है, लेकिन मर्द को हज बदल में भेझना ज़्यादा बेहतर है।

(रद्दुल मुहतार 241/2)

प्रश्नः एहराम की चादर जो हज और उमरे में इस्तेमाल होती है उसको आम इस्तेमाल में लाया जा सकता है या नहीं?

उत्तरः हज और उमरे के बाद एहराम की चादर को आम इस्तेमाल में ला सकते हैं उसके इस्तेमाल में कोई शरई रुकावट नहीं है।

प्रश्नः एक व्यक्ति ने किसी दूसरे को हज्जे बदल के लिए भेजा और सफ़र के सारे खर्चे के लिए रक़म भी दे दी, हज बदल करने वाले ने एहतियात से खर्च किया और कुछ रक़म बच गई, अब उस बची हुई रक़म को क्या करे, खुद रख ले या हज करवाने वाले को वापस कर दे?

उत्तरः सफरे हज मुकम्मल होने के बाद अगर रक़म बच रही है तो यह बची रक़म उस व्यक्ति को वापस करदे, जिन्होंने हज बदल के लिए भेजा था।

(अलदुर्रुल मुख़्तार 73/4)

प्रश्नः बहुत से हाजी हज से वापसी के बाद अपने अज़ीज़ों और दोस्त अहबाब की दावत करते हैं, क्या यह दावत दुरुस्त है, क्या यह रस्म बिदअ़त तो नहीं?

उत्तरः हज चूंकि एक अहम इबादत है और इसकी अदायगी अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है, इसलिए नेमत के शुक्रिये के तौर पर रिश्तेदारों, दोस्त अहबाब और गरीबों व मिस्कीनों की दावत करना दुरुस्त है, बिदअत नहीं, हाँ इसको ज़रूरी समझना या फख्र व शान के तौर पर करना दुरुस्त नहीं है।

प्रश्नः कुर्बानी के लिए जानवर को ज़मीन पर गिराया गया, गिराने की वजह से उसकी एक टाँग टूट गई, उसी हालत में उस जानवर को ज़बह कर दिया गया, क्या यह कुर्बानी हुई या नहीं अगर नहीं हुई तो अब क्या किया जाए, उसके भरपाई की क्या सूरत होगी?

उत्तरः कुर्बानी के लिए जानवर को गिराते वक़्त अगर टाँग टूट गई और कुर्बानी कर दी गई तो कुर्बानी हो गई, दोबारा कुर्बानी की ज़रूरत नहीं, क्योंकि कुर्बानी के लिए जानवर गिराते समय अगर जानवर में ऐब पैदा हो जाए तो यह ऐब नुकसान का कारण नहीं, अल्लामा शामी रह0 ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि ज़बह के वक़्त ऐब का पैदा हो जाना कुर्बानी के लिए नुक़सानदेह नहीं है।

(रद्दुल मुहतार 207/5)

प्रश्नः एक व्यक्ति ने कुर्बानी की नीयत से एक बकरा पाला, लेकिन वह इतना मोटा हो गया कि उसकी कीमत एक पड़वे के बराबर हो गई चुनांचे बकरे वाले ने उस बकरे को बेच कर एक पड़वा खरीदा और सात लोगों की ओर से कुर्बानी की, क्या यह कुर्बानी सबकी ओर से हो गई, या सिर्फ एक व्यक्ति की तरफ़ से हुई?

उत्तरः सिर्फ कुर्बानी की नीयत से बकरा पालने की वजह से उसकी कुर्बानी निश्चित रूप से वाजिब नहीं हुई, इसलिए उसके बदले में जो पड़वा खरीद कर सात लोगों की तरफ़ से कुर्बानी की गई वह सबकी ओर से हो गई।

(फतावा हिन्दिया 294/5)

प्रश्नः अगर कोई मालदार मुसलमान कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी करने के बजाए कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करके सवाब ले तो क्या उसको कुर्बानी मुआ़फ़ हो जाएगी?

उत्तरः अगर कोई मालदार मुसलमान जिस पर कुर्बानी वाजिब है वह कुर्बानी के दिनों में एक नहीं कई जानवरों की कीमत सदक़ा कर दे तो उसको सद्क़ा करने का सवाब तो मिलेगा लेकिन उसका वाजिब अदा न होगा और वाजिब छोड़ने का गुनाह उसके सर रहेगा, अहनाफ़ का यही मसलक है। (आलमगीरी)

प्रश्नः अगर किसी किसान के पास इतना गल्ला है जो उसके घर वालों के खाने के लिए साल भर को काफी है मगर उसके पास न तो निसाब भर के ज़ेवर हैं न 612 ग्राम चाँदी खरीदने के पैसे हैं तो क्या उस पर कुर्बानी वाजिब है?

उत्तरः ऐसा किसान जिसके पास उसके घर वालों के खाने के लिए साल भर का ग़ल्ला मौजूद है चाहे उसके पास न 612 ग्राम चांदी के ज़ेवर हों न 612 ग्राम चांदी खरीदने के पैसे हों तब भी उस पर कुर्बानी वाजिब होगी। ऐसी सूरत में सिर्फ घर मालिक पर कुर्बानी वाजिब होगी।

प्रश्नः अगर कोई शख़्स अपनी जानिब से कुर्बानी न करके किसी बुजुर्ग या अपने बाप दादा की तरफ से कुर्बानी करे तो इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः कोई शख़्स जिस पर

कुर्बानी वाजिब है अपनी कुर्बानी न करके दूसरे बुज़ुर्गों या खान्दान के लोगों की तरफ से कुर्बानी करेगा तो उसको और जिसकी तरफ से कुर्बानी की है उसको सवाब मिलेगा लेकिन खुद उस का वाजिब उस पर बाक़ी रहेगा और वाजिब छोड़ने का गुनाह होगा। लिहाज़ा चाहिए कि वह पहले अपना वाजिब अदा करे फिर अगर कर सकता है तो दूसरों की तरफ से कुर्बानी करे।

प्रश्नः यतीम अगर मालदार हो तो उसके माल से कुर्बानी की जाएगी या नही?

उत्तरः यतीम से यहां मुराद वह नाबालिग़ बच्चा या बच्ची है जिसके बाप का इन्तिक़ाल हो चुका हो, उसके माल पर न ज़कात है न ईदुल फित्र का फित्रा न कुर्बानी यहां तक कि वह बालिग़ हो जाए, बालिग़ होने पर वह अपने माल पर सदक–ए–फित्र निकालेगा, कुर्बानी करेगा और माल पर साल गुज़र जाने पर ज़कात अदा करेगा, उसकी नाबालिग़ी के ज़माने में यह तीनों ख़र्चे माफ रहेंगे।

प्रश्नः कुर्बानी का जानवर कैसा होना चाहिए?

उत्तरः कुर्बानी का जानवर सिहत मंद हो, मोटा तगड़ा हो, दुब्ले जानवर की कुर्बानी हो जाती है मगर बहुत ज़्यादा दुबला न हो, बूढ़े जानवर की कुर्बानी भी हो जाती है, बस जानवर खाता पीता हो चलता फिरता हो, कुर्बानी के जानवर में कोई ऐब न होना चाहिए, अगर कोई ऐब हो तो किसी आलिम से मालूम करलें इसलिए कि कुछ ऐबों के साथ कुर्बानी हो जाती है और कुछ ऐबों से कुर्बानी नहीं होती इसलिए ऐब बता कर मसअला मालूम करें। सीधी सी बात यह है कि कुर्बानी के लिए बे ऐब जानवर ही खरीदें।

प्रश्नः जानवर के किस ऐब पर कुर्बानी दुरुस्त नहीं?

उत्तरः अन्धा, काना, एक तिहाई या उससे ज़्यादा दुम कटा, एक तिहाई या उससे ज़्यादा कान कटा, की कुर्बानी दुरुस्त नहीं, ऐसा लंगड़ा की एक पाँव ज़मीन पर रख ही न पाता हो, उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त नहीं, जिस जानवर के दाँत न हों या आधे से ज़्यादा दाँत गिर गये हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं, जिस जानवर के पैदाईश ही से सींग नहीं या सींग हैं मगर कुछ हिस्सा टूट गया है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है अलबत्ता अगर सींग जड़ से टूट गये हों तो कुर्बानी दुरुस्त नहीं, ख़स्सी (बध्या) जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्नः एक शख्स का बड़ा कारोबार है, हज उस पर फर्ज है लेकिन वह बराबर ताखीर कर रहा है और कहता है जब कारोबार से फुरसत मिलेगी तब हज करुँगा उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐसा शख्स जिस पर हज फर्ज हो चुका अगर वह किसी शरई उज्र के बिना हज में ताखीर (देर) करेगा तो गुनहगार होगा।

(दुर्रेमुख्तारः 2/455)

प्रश्नः जो लोग अरब देशों में नौकरी करते हैं क्या वह माँ बाप की इजाजत के बिना हज कर सकते है?

उत्तरः हज एक शरई फरीजा है जिस पर फर्ज हो गया उसके लिए उसका अदा करना जरूरी है मजकूरा शख़्स जब अरब देश में नौकरी करता है और माँ बाप उस पर राजी हैं तो ऐसी सूरत में हज के लिए माँ बाप की इजाजत ज़रूरी नहीं है। हज के लिए माँ बाप की इजाजत उस वक्त ज़रूरी है जब कि माँ बाप को उनकी खिदमत की ज़रूरत हो। (गुनीयतुन्नासिकः 34)

❖❖❖

धैर्य तथा दीन पर स्थिरता अपनाने की आवश्यकता

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

इस समय देश की परिस्थितियों में मुसलमानों के लिए जो परिस्थितियां हैं वह बड़ी ही चिन्तनीय हैं प्रतिदिन नवीन समस्याएं उत्पन्न की जा रही हैं, चाहे शिक्षा संबन्धित बातें हों या उसका संबंध राजनीति से हो, या धर्म से।

समस्त संसार में इस समय मुसलमान अपने विरोधियों के निशाने पर हैं जिसका प्रभाव हमारे देश पर भी है इस्लाम विरोधी इन परिस्थितियों का लाभ उठा कर मुसलमानों को निशाना बना रहे हैं कि मुसलमानों को हर ओर से दबाव में ले कर अपने अधिकार में कर लें तथा उन को मान्सिक तथा क्रियात्मक दशा में पराजय प्राप्त समुदाय बना दें। अतः विद्यमान परिस्थिति का अवलोकन करके हम लोगों को अपने दीन, अपनी सभ्यता तथा अपनी शैक्षणिक विशेषताओं की सुरक्षा हेतु अग्रसर होना चाहिए तथा इस बात का विश्वास अपने अन्दर पैदा करना चाहिए कि अगर इस्लामी गुणों से अपने को सुसज्जित कर लिया तो संसार की कोई शक्ति हम को पराजित नहीं कर सकती और विजय हमारा भाग्य होगा।

लेकिन अगर (खुदा न करे) हमने इस्लाम को पूरी तरह न अपनाया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण से मुँह मोड़ लिया तो निश्चय ही विनाश तथा पतन हमारे भाग्य में आएंगे और कुफ्र व बातिल (नास्तिकता तथा अधर्म) की आँधी के समक्ष हम ठहर न पाएंगे। याद रखिए इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में नास्तिकता की कठोर आंधियां पहले भी आई हैं उस समय ऐसा लगता था कि यह नास्तिकता की कठोर आंधियां इस्लाम और मुसलमानों का नाम व निशान मिटा देंगी परन्तु मुसलमान तथा इस्लाम अधिक दृढ़ हुआ। मुसलमानों की दीन पर दृढ़ता, धैर्य तथा स्थिरता के सामने विरोधियों के इरादे चकनाचूर हो गये और अल्लाह तआला की मदद से मुसलमान सफल हुए तथा इस्लाम अधिक दृढ़ हुआ। ◆◆

पृष्ठ....25...का शेष

मैं तुम को कठोर दण्ड दूंगा और तुझे जेल में डाल दूंगा। हजरत मूसा ने कहा कि यदि मैं तुम को कोई चमत्कार दिखाऊं तो क्या मेरी बातों पर विश्वास करोगे या तब भी मेरी रिसालत का इन्कार करते रहोगे? फिरऔन ने पहले तो हजरत मूसा की बातों की खिल्ली उड़ाई फिर कुछ सोच कर बोला अच्छा दिखाओ कोई चमत्कार। मौका मिलते ही हज़रत मूसा ने अपनी लाठी धरती पर पर डाल दी। लाठी ज़मीन पर गिरते ही अजगर बन गई और फुंकारें मारने लगी। फिर हज़रत मूसा ने अपना हाथ बगल में डाल कर जो खींचा तो उसकी चमक से सभी की आंखें चुंधिया गईं। सभी दरबारी भयभीत हो गए। निकट था कि वे सब के सब हजरत मूसा के पक्ष में उठ खड़े होते और उनकी बातों को मान लेते। फिरऔन के लिए यह बड़ी संकट की घड़ी थी, उसका सिंघासन डोल रहा था। उसने तुरंत ही एक अन्य चाल चली। अपने दरबारियों को संबोधित करते हुए बोला, तुमने मूसा के चमत्कार देखे?क्या यह इसके रसूल होने के प्रमाण माने जा सकते हैं, रसूल कहीं ऐसे जादू दिखाते फिरते हैं। मैं समझ गया यह पक्का जादूगर बन गया है। कुछ दरबारी भी चापलूसी में लग गए, कहने लगे हुजूर यह सब तो जादू है, जादू होने में भला क्या शक है।

अब जादूगरों का हजरत मूसा से मुकाबले का हाल फिर कभी पढ़ना इस सच्चा राही में।

❖❖❖

ख़ुशगवार घरेलू ज़िन्दगी

डॉ0 मुहियुद्दीन ग़ाज़ी

हम अक्सर निकाह का ख़ुत्बा सुनते हैं, लेकिन क्या हमने कभी ग़ौर किया है कि इस ख़ुत्बे में क्या कहा जा रहा है? निकाह के ख़ुत्बे में हम्द व सना के बाद कुरआने करीम की जिन तीन आयतों की तिलावत की जाती है उन तीनों में हैरत अंगेज़ तौर पर निकाह का कोई तज़किरा ही नहीं है, बल्कि तीनों जगह एक ही मज़मून पर ज़ोर दिया गया है और वह है 'तक़वा' तक़वा और परहेज़गारी इतनी प्रभावशाली है जिसके तहत बहुत सी समस्याएं खुद हल हो जाती हैं।

अल्लाह तआला ने निकाह के खुत्बे में तक़वा व परहेज़गारी का हुक्म इरशाद फ़रमा कर इस ओर ध्यान दिलाया है कि पति पत्नी एक खुशगवार ज़िन्दगी और एक पुर–सुकून घर उस वक़्त बना सकेंगे जब दोनों तक़वा व परहेज़गारी वाले हों। इन दोनों को अपने हर अमल की जवाबदेही की फ़िक्र हो। अल्लाह के यहां जवाबदेही का एहसास वह वाहिद पैमाना है जिससे सच्चाई और अमानत का एहसास ज़िन्दा रहता है।

अगर यह एहसास न रहे तो दुनिया की कोई अदालत, कम्यूनिटी, अंजुमन, सरबराही या खानदान इन दोनों को जोड़ नहीं सकते। चूंकि यह ऐसा गहरा तअल्लुक़ है जिससे बढ़कर नज़दीकी की कोई गुंजाइश नहीं। दुनिया के हर रिश्ते में सौतेलेपन की गुंजाइश है, लेकिन इस में नहीं। दुनिया में शायद कोई तअल्लुक़ बनावट या झूठ के सहारे चल सकता हो लेकिन यह तअल्लुक़ भरपूर एहसास व जज़्बात के बिना एक बेजान शरीर की तरह बन जाता है।

घर का सुकूनः–

यही वहज है कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया में सबसे पहले पति–पत्नी के तअल्लुक़ से इन्सानी आलम की शुरुआत की। इस तअल्लुक़ के मक़सद और मज़बूरी की क्या सूरतें हो सकती हैं? इस हवाले से अल्लाह तआला कलामे–पाक में इरशाद फरमाते हैंः–

''और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से बीवियां बनाईं ताकि तुम उसके पास सुकून हासिल करो और तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी। (अल–रूमः 21) अल्लाह तआला ने पति–पत्नी के तअल्लुक़ को सुकून के खज़ाने की चाबी क़रार दिया है। मालूम हुआ कि सुकून का अस्ल मर्क़ज़ इन्सान का अपना घर होना चाहिए जहां वह अपने पत्नी और बच्चों का चेहरा देख कर सुकून पा सके, लेकिन अगर घर में सुकून की फ़ज़ा न रहे और घर ईंट–पत्थर और केवल नक़्श व निगार से सजा हो तो वह घर–घर नहीं बल्कि 'डिप्रेशन केन्द्र' बन जाता है। फिर हर कोई होटल, कलब, दोस्त–यार, तफ़रीह और दूसरी बनावटी सरगर्मियों के नाम से सुकून की तलाश में फ़रार होने की नाकाम कोशिश करता है। क्योंकि जिस किसी को अपने घर में सुकून नहीं मिल सकता तो दुनिया के किसी कोने में भी वह सुकून से नहीं रह सकता। घर का सुकून किस तरह बहाल हो जाए? इस हवाले से कुछ काम नज़र के सामने रखना लाज़िमी है। उनमें से कुछ का

तअल्लुक़ मर्द की ज़िम्मेदारियों से है और कुछ का तअल्लुक़ औरत की ज़िम्मेदारियों से।

पति पत्नी का रिश्ता कुरआन की रोशनी में:–

अल्लाह तआला फरमाता है: ''वह तुम्हारे लिए लिबास की तरह हैं और तुम उनके लिए लिबास की तरह हो''।

(अल बक़रा:187)

अल्लाह तआला ने इस तअल्लुक़ को एक बहुत ही व्यापक उदाहरण दे कर बात को समझाया है कि लिबास इन्सानी बदन के लिए कई आधार पर अहम है, जैसे सतर, इज़्ज़त, हिफ़ाज़त, शोभा, सेहत, तहज़ीब आदि। जिस तरह लिबास हमारी सतरपोशी का ज़रिया है, यह रिश्ता भी हमारी कमियों की हिफ़ाज़त का ज़रिया है। जिस तरह लिबास की शोभा इज़्ज़त देती है, वैसे ही यह रिश्ता इज़्ज़त बढ़ाने का ज़रिया हैं जिस तरह लिबास हमें सर्दी–गर्मी से बचाता है, उसी तरह यह भी हमारे बचाव का ज़रिया है। पति–पत्नी की इज़्जत व ज़िल्लत, एहतिराम और मक़ाम, एक दूसरे से जुड़े हैं। इन दोनों में हर एक के ज़िम्मे है कि वह अपने रिश्ते को हादिसों और आफ़तों से बचा बचा कर रखे।

लिबास के बारे में एक अहम बात यह है कि हमारे लिबास पर अगर राह चलते कोई कीचड़, गंदगी या दाग़ लग जाए तो हम अफ़सोस का इज़हार करते हैं और उसे फेंकने, फ़ाड़ने या उस हिस्से को काटने के बजाय बहुत ख़्याल के साथ तुरंत उसे साफ़ करने की कोशिश करते हैं। ठीक यही मामला पति–पत्नी के तअल्लुक़ का है कि इन्सानी फ़ितरत के कारण अगर कोई अनबन, झगड़ा, विवाद या नाराज़गी हो जाए तो उनको अपने घर का ख़्याल रखते हुए इस विवाद को तुरंत समेटने की कोशिश करनी चाहिए।

दरअस्ल यह रिश्ता ज़िम्मेदारियों के बंटवारे का मामला है। इसमें किसी एक को पूरा कुसूरवार ठहराना ग़लत है। इन्सान ग़लतियों का पुतला है, उसकी फ़ितरत में भुलक्कड़पन और ग़लतियां करना शामिल है। लिहाज़ा जिस तरह पति एक इन्सान है उसी तरह पत्नी भी एक इन्सान है और इन्सान होने के नाते दोनों को अपनी कारकर्दगी पर नज़र रखना ज़रूरी है। यही वजह है कि कुरआने–करीम और हदीसों ने दोनों की ज़िम्मेदारियों के हवाले से तफ़सीली रोशनी डाली है।

शिकायतों का हल:–

इस बारे में सबसे पहली बात यह समझने की है कि हर जोड़ा शिकायतों की एक लम्बी लिस्ट ज़ेहन में लिए फिरता है और जहां कहीं मौक़ा मिलता है शिकायत सुनाना शुरु कर देता है। जिसमें रिश्ता ठीक जगह न होना, ख़िदमत में कोताही, झगड़ा, गालम–ग्लोच, मारपीट, ताने, रिहाइश, वालदैन, घर वाले, ग़रज़ हर तरह की शिकायतें सुनने को मिलती हैं। इन तमाम के बाद एक बहुत बड़ा सवाल यह पैदा होता है कि आया इतनी ख़राबियां सामने आ जाने के बाद आप किस सूरते–हाल तक पहुँचते हैं? आया आपने इन ख़राबियों की वजह से रिश्ता ख़त्म करना है? अगर हां तो शरीयत ने हर दो को ये मौक़ा दिया है ताकि कोई इन्सान फ़ुजूल में अपनी मुख़्तसर ज़िन्दगी का सुकून ग़ारत न करे, बल्कि खुला या तलाक़ के इख़्तियार का इस्तेमाल करके अलग हो जाए और अपनी नई ज़िन्दगी शुरु करे।

लेकिन हैरतअंगेज़ तौर पर लोग इस इख़्तियार को इस्तेमाल करने का नहीं सोचते

बल्कि साथ रहना चाहते हैं। जिससे मालूम हुआ कि जोड़ा एक दूसरे के साथ रहने में दिलचस्पी रखता है। अब इस मौक़ा पर यह बात बहुत अहम है कि जब आपने साथ ही रहना है तो शिकायतों और एतिराज़ों का भारी बोझ उठाने के बजाय मामलों को हल करने वाली बात की तरफ़ आएं। आप एतिराज़ न करें बल्कि सवाल करें कि मेरा मसला कैसे हल होगा? मैं कैसे अपने पति के साथ अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सकूंगी? लिहाज़ा यह पहलू साफ़ हुआ कि वक़्त बे वक़्त, मौक़ा बे मौक़ा शिकायतों से केवल ग़ीबत, हसद, बोहतान, गालम ग्लोच और फ़ित्ना व फ़साद के अलावा कुछ हाथ नहीं आता, बल्कि फ़ैसले की ताक़त को इस्तेमाल में लाते हुए मसायल के हल की तरफ़ आने की ज़रूरत है।

पत्नी की ज़िम्मेदारियाँः–

सबसे पहले उन कार्यों को समझने की ज़रूरत है जिनका तअल्लुक़ पत्नी से है।

पत्नी के लिए लाज़िम है कि वह अपने पति और बच्चों की तर्बियत को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाए और अपनी पूरी सलाहियतें अपने घर को जन्नत बनाने में लगाएं इसका आसान तरीक़ा यह है कि पत्नी अपना पूरा ध्यान घर पर केंद्रित रखे। लेकिन आज यह बात समझना ज़रा मुश्किल हो गया है। एक पढ़ी–लिखी लड़की से जब यह कहा जाता है कि आप अपने घर पर ज़्यादा ध्यान दें तो उनको यह मश्वरा देने वाला तंगनज़र दिखाई देता है। लड़कियां तालीम ज़रूर हासिल करें और ऐसे शोबों में जहां माहिरीन औरतों की ज़रूरत है वहां अपनी ख़िदमात पेश करें, लेकिन वह एक अपवाद है। आम हालात में पति–पत्नी दोनों अपनी आर्थिक भाग–दौड़ के कारण अपने घर और बच्चों का ठीक से ख़्याल नहीं रख पाते और एक नौकरानी रख कर काम चलाया जाता है। जिसके हाथ के खानों में न खुलूस का जज़्बा होता है न उसकी तर्बियत ही में माँ की ममता होती है।

ख़ानादारी बजाहिर एक मामूली सा काम है लेकिन दरअस्ल यह एक लम्बी जिद्दोजेहद का नाम है जिसके असरात नस्लों तक जा पहुँचते हैं। मशहूर है कि एक ख़ातून ने एक आलिमे–दीन से पूछा कि जितने भी नबी आए हैं सब मर्द हैं। अल्लाह ने औरतों को नबी बना कर क्यों नहीं भेजा? जवाब में अर्ज़ किया कि औरतें नबी बन कर नहीं आईं लेकिन नबियों को जन्म देने का सेहरा इन्हीं औरतों के सर है।

औरतों के लिए नबवी तरीक़ाः–

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस में पत्नियों को उनकी ज़िम्मेदारियां बताई गई हैं, फ़रमायाः ''एक पत्नी जब पंजवक़्ता नमाज़ की पाबंदी करे और रमज़ान के रोज़े रखे और अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे और अपने पति की ख़िदमत करे तो उसको इजाज़त है कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।'' (तबरानीः 8977)

इस हदीस में आप औरतों की ज़िम्मेदारियां बता रहे हैं–

1. फर्ज़ नमाज़ की अदाएगी।
2. फर्ज़ रोज़ों की अदाएगी।
3. इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करना।
4. पति की ख़िदमत करना।

फिर जन्नत के सारे दरवाज़े उनके लिए खुल जाएंगे, लेकिन बदले में कोई लंबी–चौड़ी इबादत की मांग नहीं की जा

रही है, बल्कि केवल फ़राइज़ की अदाएगी शामिल है और आखिरी अहम बात अपने पति की ख़िदमत है। पति की खिदमत में वे सारे काम आते हैं जो एक पत्नी अपने घर में अंजाम देती है जिसमें बच्चों की पैदाइश, उनकी तर्बियत, किचन का इंतिज़ाम, सफ़ाई का इंतिज़ाम वग़ैरा शामिल है। जिन कामों को औरतें दुनियादारी के काम समझती हैं और मामूल, आदत या मजबूरी के तहत करती हैं, उसको इस्लाम एक अज़ीम इबादत क़रार देकर उसके बदले में इतनी बड़ी खुशखबरी सुना रहा है। अल्लाहु अकबर

एक अहम काम औरतों के ज़िम्मे यह है कि व ''शुक्र'' का एहतिमाम करें। अल्लाह ने उनको बड़ी कुर्बानियाँ देने वाली फ़ितरत दी है। लिहाज़ा कुर्बानी देने के बाद या ख़िदमत में खप जाने के बाद बहुत ज़रूरी है कि वे अपने सवाब को बचाते हुए अपने ज़ेहन और अपनी ज़ुबान को शिकायत पर न लगाएं, बल्कि अल्लाह ने जो भी दिया है उसे ग़नीमत जान कर अपने घर को ख़ुशहाल रखें। शिकायती रागनी एक ऐसी चिंगारी है जो पूरे घर को आग लगा सकती है।

पत्नी अपने पति से भरपूर उम्मीद रखती है कि उसकी और बच्चों की पूरी ज़िम्मेदारी पति अदा करेगा और वह ख़र्चे की चिन्ता में लगे बिना अपने घर को संभालती है। उसके लाशऊर में ये खटका रहता है कि उसका अब इस दुनिया में पति के सिवा कोई भी नहीं। इसी वजह से वह सौतन से डरती है, क्यांकि उसे यह डर होता है कि वह उसके रास्तें रुकावट बन जाएगी। इसीलिए पति इस बात का ख़ास ख़्याल रखे कि अगर वह दूसरी शादी करता है तो इंसाफ़ का ख़ास ख़्याल रखे। लेकिन दूसरी शादी की धमकी न दे, इससे नुक़्सान की आशंका है।

मर्दों की ज़िम्मेदारियाँः—

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों के हुकूक के बारे में जो हिदायतें हैं, उनमें एक अहम बात यह है कि औरतों का मिज़ाज समझा जाए और उनसे उसी मिज़ाज के मुवाफ़िक़ उम्मीदें रखी जाएं। औरतों के हवाले से तीन बातों का समझना बहुत ही ज़रूरी है। (1) हिफ़ाज़त (2) इज़्ज़त और (3) हौसला अफ़ज़ाई।

पत्नी अपने पति से भरपूर उम्मीद रखती है कि उसकी और मेरे बच्चों की पूरी ज़िम्मेदारी पति अदा करेगा और वह ख़र्चे की चिन्ता में लगे बिना अपने घर को संभालती है। उसके लाशऊर में ये खटका रहता है कि उसका अब इस दुनिया में पति के सिवा कोई भी नहीं। इसी वजह से वह सौतन से डरती है, क्योंकि उसे यह डर होता है कि वह उसके रास्ते में रुकावट बन जाएगी। इसीलिए पति इस बात का ख़ास ख़्याल रखे कि अगर वह दूसरी शादी करता है तो इंसाफ़ का ख़ास ख़्याल रखे। लेकिन दूसरी शादी की धमकी न दे, इससे नुक़्सान की आशंका है।

पत्नी इज़्ज़त चाहती है। अपनी, अपने बच्चों की, अपने वालदैन वग़ैरा की उसे इज़्ज़त न मिले तो वह ख़ुद को एक मुलाज़िमा समझने लगती है और उसे इज़्ज़त मिल जाए तो जान खपा कर भी ख़ुश रहती है।

❖❖❖

इस्लाम और पर्यावरण

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

एक बार की बात है अंतिम संदेष्टा हजरत मुहम्मद सल्ल. अपने काफिले के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनके काफिले में शामिल एक सहाबी ने एक परिंदे के घोंसले से उसका बच्चा उठा लिया। जब ये बात हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को मालूम हुई तो आपने इस कृत्य की भर्त्सना की और परिंदे के बच्चे को बहुत संभाल कर वापस उसके घोंसले में रखवा दिया। पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन से जुड़ी यह कथा इस्लाम में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता की ओर इशारा करती है।

एक अवसर पर हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि एक आदमी रास्ते पर चला जा रहा था, उसे सख़्त प्यास लगी, चलते –चलते उसको एक कुंवाँ मिला, वह उसके अंदर उतरा और पानी पीकर बाहर निकल आया, जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता है जिसकी जबान निकली हुई है और सख्त प्यास की वजह से वह कीचड़ चाट रहा है। उस आदमी ने दिल में कहा कि इस कुत्ते को भी वैसी ही प्यास लगी है जैसी कि मुझे लगी थी, फिर वह कुत्ते पर रहम खाकर उस कुंवे में दोबारा उतरा और अपने चमड़े के मोजे में पानी भर कर उसने उसको अपने मुंह में पकड़ लिया और कुंवे से बाहर निकल आया, फिर (मोजे से पानी उँडेल कर) कुत्ते को पिलाया। अल्लाह ने उसकी रहमदिली और मेहनत की कद्र की और इस कार्य पर उसको क्षमादान देने का फैसला कर दिया। ये किस्सा सुन कर कुछ सहाबा (सहचरों) ने हजरत मुहम्मद सल्ल0 से पूछा कि– ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जानवरों (का कष्ट दूर करने) में भी हमारे लिए पुण्य है? आप सल्ल0 ने कहा, हर जीवित और सजल जिगर रखने वाले जानवरों के कष्ट को दूर करने में पुण्य और बदला है (बुखारी–मुस्लिम)।

आज से चौदह सदी पहले जब कुरआन अवतरित हुआ और हदीस अस्तित्व में आई तब प्रकृति और पर्यावरण के विषय में बात करना न तो पॉलिटिकली करेक्ट माना जाता था और न ही इसकी ज़रूरत थी। तब भी कुरआन शरीफ और हदीस दोनों में ही जल, जंगल, ज़मीन को लेकर समस्त प्राणी जगत के बारे में जिस संजीदगी से लिखा गया है, वो अद्भुत और अनुकरणीय है। कुरआन और हदीस में वृक्षारोपण और वन संरक्षण की सीख दी गई है। वन्य जीव संरक्षण के तरीक़े बताए गए हैं। जल के महत्त्व को बताया गया है और उन सारी बातों को विस्तार से बताया गया है कि जिन पर चलकर मानव जाति प्रकृति के साथ सामंजस्य बना सकती है।

पवित्र कुरआन में तकरीबन 6 हज़ार से ज़्यादा आयतें हैं, जिनमें से सैकड़ों आयतें और नबी की अनेकों हदीसें पर्यावरण तथा प्रकृति की बात करती हैं। कुरआन में धरती शब्द का प्रयोग भी सैकड़ों बार हुआ है। इस्लामी क़ानून के लिए इस्तेमाल किए जाने वाला शब्द शरिया का शाब्दिक अर्थ भी ''जल का स्रोत''है।

अल्लाह के 99 नाम हैं, जो उनके गुणों पर आधारित है। उन नामों में एक खालिक भी है, जिसका अर्थ होता है बनाने वाला, रचने वाला। इस्लामी विश्वास के अनुसार सारी क़ायनात की रचना अल्लाह ने की है इसलिए इस कायनात का शोषण गुनाह और संरक्षण पुण्य है। अल्लाह ने सृष्टि के संरक्षण की जिम्मेदारी मनुष्यों को सौंपी है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 मनोरंजन के लिए और बिना ज़रूरत के कोई व्यक्ति किसी परिंदे या जानवर को हानि पहुंचाता तो उस पर सख़्त नाराज

होते और उसपर लानत करते।

एक बार का किस्सा है कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 के सहचर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कुरैश कबीले के कुछ नौजवानों के पास से गुज़रे जो एक चिड़िया को लटका कर निशानेबाजी कर रहे थे, चिड़िया के मालिक से ये तय कर लिया था कि जो तीर निशाने पर न लगे वह तुम्हारा होगा। जब उन्होंने अब्दुल्लाह रज़ि0 को देखा तो इधर–उधर निकल लिए, हजरत अब्दुल्लाह ने पूछा कि ये किसने किया? उसपर खुदा की लानत और धिक्कार हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने ऐसे व्यक्ति पर लानत की है जिसने किसी जानवर को निशाने का अभ्यास करने के लिए निशाना बनाया हो। (बुखारी–मुस्लिम)

इस्लाम की पवित्र पुस्तक हदीस में है कि एक स्त्री को दोजख के दुख झेलने पड़े क्योंकि उसने एक बिल्ली को तब तक बंद रखा जब तक वह भूख से मर नहीं गई। दूसरी हदीस में एक तवायफ के सारे पाप धुल जाते हैं क्योंकि उसने एक बार एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।

इस्लाम और जलः–

इस्लाम की जन्मस्थली मरुस्थल है, इसलिए इस्लाम में जल को ''जीवन का रहस्य'' की प्रतिष्ठा दी गई है। इस्लाम में पानी को न सिर्फ पाक करार दिया गया है बल्कि इसे अल्लाह की तरफ से मनुष्य के लिये एक नेअमत बताया गया है' पवित्र कुरआन में है कि "और वही (अल्लाह) है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। (सूरह अल फुरकान, आयत नंबर 54)

इसी प्रकार दूसरी जगह है कि "और हमने (अल्लाह ने) ही आकाश से पाक पानी उतारा।'' (सूरह फुरकान, आयत नंबर 48) इसी तरह सूरह अंबिया में आता है कि अल्लाह ने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई।

(सूरह अंबिया, आयत नंबर 30)

इस्लाम में पानी की बर्बादी की सख़्त मनाही है। मनुष्य, जंतु, पक्षी और पेड़– पौधों के लिए पीने योग्य पानी के संरक्षण को पुण्य कहा गया है और मान्यता है कि इससे अल्लाह खुश होते हैं। फैक्ट्री के प्रदूषित पानी को जल स्रोत में छोड़ना भी एक तरह से इस्लाम की नजर में गुनाह है क्योंकि इससे जल प्रदूषित होता है और जलचरों के जीवन को नुकसान पहुंचता है।

वृक्ष और वनस्पतियों का महत्वः–

इस्लाम में वनस्पतियों के महत्व पर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अपने सहचरों को निरंतर उभारा है, उन्होंने अपने सहाबा को अधिक से अधिक पेड़ लगाने की सीख दी है। साथ ही बिना जरूरत के पेड़ काटने को गुनाह माना है। उनके अनुसार पेड़ लगाना भी एक प्रकार का दान है क्योंकि वृक्ष पक्षियों और कई दूसरे जीवों के लिये आश्रय स्थली बनते हैं, इसके पत्ते कई जीवों के आहार के काम में आतें हैं और इसकी छाया राहगीरों को शीतलता प्रदान करती है। इसी संदर्भ में" हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा, जो कोई मुसलमान आदमी पेड़– पौधा लगाये या खेती करे, फिर कोई चिड़िया या इंसान या जानवर उस पेड़ या खेती में से खाये तो यह उस आदमी की तरफ से दान है"।

(बुखारी–मुस्लिम)

कुरआन में अनेक स्थानों पर पानी का जिक्र आया है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने पानी को बर्बाद होने से बचाने की बार–बार नसीहत की। आप कहते थे कि वजू में पानी व्यर्थ न खर्च करो,चाहे तुम नदी में वजू कर रहे हो। एक हदीस के हवाले से पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद (सल्ल0) अपने सहचरों से कहा करते कि जितनी ज़रूरत हो, पानी उतना ही ख़र्च किया करो। आपने एक तरफ जहां जल संरक्षण पर जोर दिया, वहीं दूसरी ओर पानी को प्रदूषित नहीं करने का हुक्म भी दिया। आपने ठहरे हुए या बहते हुए पानी में पेशाब नहीं करने की ताकीद की। आपने जंग में भी फलदार पेड़, दुश्मनों के उपासना गृह और पानी के स्रोतों को नुकसान नहीं पहुंचाने का आदेश दिया।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

तलाक का क़ानूनः–

पिछली तफसील से इस्लाम के कानूने तलाक में सिर्फ मर्द को ही तलाक का अधिकार देने की हिकमत (युक्ति) भी समझ में आ जाती है क्यों कि तलाक के नतीजे में सरा सर माली नुकसान मर्द ही का होता है, औरत के लिए तो बहुत से आमदनी के रास्ते निकल आते हैं इसकी अच्छी खासी तफसील इससे पहले गुजर चुकी है "शरीयत का कानून –ए–तलाक" के अध्याय में।

सही इस्लामी समाज में तो औरत का, चाहे तलाक शुदा हो या विधवा, दूसरी शादी भी आसानी से हो जाती है, बल्कि कभी कभी उसे इद्दत के दिन पूरे करने मुश्किल हो जाते हैं कि दूसरी शादी के इच्छुक पैदा हो जाते हैं (शायद इसी वजह से कुरआन में औरत को इद्दत के दौरान साफतौर पर पैगाम देने से मना किया गया है) और फिर अगर औरत को अपने पति से वास्तव में जायज शिकायतें हों और उनको दूर करने का कोई रास्ता न निकल रहा हो तो उसे खुला और फस्खे निकाह जैसे अवसर इस्लामी कानून में दिए गए हैं जिनके जरिये वो जालिम पति से नजात हासिल कर सकती है,फिर पति को तलाक का भी ऐसा आजाद हक नहीं दिया गया है जैसा कि आम तौर पर लोगों के दिमाग में गलत धारणा पैदा हो गई है (इस धारणा में मुसलमान मर्दों का तलाक के हक का बेजा इस्तेमाल करने का बड़ा दखल है) बल्कि तलाक देने से पहले और भी कई चरणों से गुजरने का हुक्म दिया गया है, आखिरी चारे के तौर पर तलाक देने की इजाजत दी गई है, जबकि दोनों की निबाह की कोई शक्ल ही नज़र न आती हो और उन दोनों का जबरदस्ती शादी के बंधन में बंधे रहना दोनों के लिए– बल्कि दोनों– के परिवारों के लिए– वबाले जान बन रहा हो। फिर इसमें ऐसी सख्ती भी नहीं बरती गई कि अदालत के बिना तलाक हो ही न सकती हो, बल्कि ऐसी बुरी स्थिति से निकलना और छुटकारा पाना भी आसान बना दिया गया है, क्योंकि अदालत में मुकद्दमों के चक्कर में पड़ कर कभी कभी तलाक लेना और देना इतना खर्चीला और दुखदाई काम होता है की इंसान उससे बचने के लिए कभी कभी गलत कदम उठा लेता है, जिन धर्मों और देशों में तलाक सिर्फ अदालत के माध्यम से ही देने – लेने की पाबंदी है वहाँ औरतों को जलाने, पानी में डुबोने और दूसरे तरीकों से मार डालने की बहुत घटनाएं घटती हैं, इस पाबंदी के अप्राकृतिक होने के खुले सुबूत मौजूद हैं, फिर अदालत के जरिये तलाक देने में आमतौर से औरत के कैरेक्टर में खराबी साबित करना आसान समझा जाता है। इस सिलसिले में सच कम, ज़्यादातर झूठे आरोप इस कमजोर पक्ष पर लगाए जाते और उसके सुबूत पेश किए जाते हैं, गौर किया जाए कि ऐसी परिस्थिति में क्या औरत की बदनामी न होगी? और क्या ऐसी तलाक के बाद उससे कोई दूसरा शरीफ आदमी निकाह करने पर राजी हो सकेगा। इस सिलसिले में एक भयानक और शर्मनाक घटना कुछ साल पहले समाचार पत्रों में आई कि एक गैर मुस्लिम व्यक्ति ने तलाक देने के लिए अपनी बीवी को अपने रिश्तेदार से, दुष्कर्म पर मजबूर किया ताकि दुष्कर्म की अवस्था का वीडियो तैयार करा कर अदालत में सुबूत में पेश किया जा सके ।

(राष्ट्रीय सहाराः लखनऊ 25 जुलाई 2005)

❖❖❖

मशहूर आलिमे दीन मौलाना अब्दुल अलीम फ़ारूक़ी का इन्तिक़ाल

—इदारा

इल्मी व दीनी हल्क़ों के लिए बहुत दुखदायी ख़बर है कि मौलाना फ़ारूक़ी का इन्तिक़ाल 24 अप्रैल 2024 ई0 साढ़े पाँच बजे सुबह उनके निवास स्थान लखनऊ में हो गया (**इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन**), मौलाना फ़ारूक़ी मरहूम, इमाम अहले सुन्नत मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 के पोते और ज़ैग़मे इस्लाम मौलाना अब्दुस्सलाम फ़ारूक़ी रह0 के बेटे थे मौलाना स्वयं भी एक दीनी व मिल्ली रहनुमा थे समाजी व सियासी मैदानों में उनका अपना एक वज़न था। मौलाना के इन्तिक़ाल पर शहरे लखनऊ और आस पास के जिलों में ग़म की लहर दौड़ गई, दीनी व मिल्ली समाजी और सियासी प्रत्येक वर्ग के लोगों ने मौलाना के घर वालों और परिजनों से ताज़ियत की और सांत्वना जताई। मौलाना फ़ारूक़ी दारुल उलूम देवबन्द और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की कार्य कारिणी के सदस्य थे इसके अलावा जमीअत उलमा–ए–हिन्द के उपाध्यक्ष और रकाबगंज स्थित दारुल मुबल्लिग़ीन के प्रबंधक थे। मौलाना की नमाज़े जनाज़ा उसी रोज़ अस्र बाद नदवतुल उलमा के फील्ड में अदा की गयी जिसमें लखनऊ, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, कानपुर, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर, बाराबन्की, फैजाबाद और आसपास के गाँव व कस्बात से हज़ारों लोगों ने शिरकत की।

मौलाना मरहूम अपने दादा इमाम अहले सुन्नत की तहरीक मदहे सहाबा के सरपरस्त और पुरज़ोर दाई थे। वह हर साल समय की पाबन्दी के साथ अमीनाबाद पार्क से ऐशबाग ईदगाह तक मदहे सहाबा जुलूस निकालते थे जिसमें हज़ारों की संख्या में लोग शरीक होते थे और बड़े उत्साह, जोश के साथ मदहे सहाबा पढ़ते थे, लखनऊ के इतिहास में यह बड़ा ऐतिहासिक और यादगारी जुलूस है जिसकी स्थापना मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी ने अपनी ज़िन्दगी में किया था। इन्शाअल्लाह यह जुलूस पूरी शान व शौकत के साथ बराबर निकलता रहेगा। इसी तरह शुहदा–ए–इस्लाम का प्रन्द्रह दिवसीय प्रोग्राम जो लगभग पौन सदी से रकाबगंज हाता शौक़त अली में चल रहा है। मौलाना अब्दुल अलीम फ़ारूक़ी मरहूम ने पूरी कामयाबी के साथ चलाया, गरज़ कि मौलना मरहूम ने अपने दादा जान मौलाना अब्दुश्शकूर फ़रूक़ी के लगाए हुए बाग़ को सरसब्ज़ शादाब रखा। अल्लाह उनके दरजात बुलन्द फ़रमाए, मौलाना मरहूम की दीनी इल्मी ख़िदमात के एतिराफ़ में बराबर तअ़जियती जलसे हो रहे हैं और अख़बारों में मज़मून लिखे जा रहे हैं, जो उनकी मक़बूलियत और हरदिल अज़ीज़ी की अलामत हैं।

मौलाना मरहूम के परिवार में बेवा के अलावा एक लड़की और तीन बेटे मौलाना अब्दुल बारी फारूकी, अब्दुर्रहमान फारूकी, और अब्दुल मालिक फ़ारूक़ी हैं।

हम अपने समस्त पाठकों से दुआ–ए–मग़फिरत की दरख़्वास करते हैं

❖❖❖

इस्लामी दअ़वत का केन्द्र

मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम, नदवतुल उलमा लखनऊ

—इदारा

मजलिस तहक़ीक़ात इस्लामी दअ़वत का वह केन्द्र है जिसकी स्थापना मई 1959 ई0 में हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की अध्यक्षता में उस वक़्त हुई जब एक लंबे अर्से से पूरे इस्लामी जगत से विभिन्न भाषाओं में ऐसे विश्वस्तरीय और अच्छे साहित्य की तैयारी की ज़रूरत महसूस की जा रही थी जो इस्लाम के प्रभाव व अतिस्तव का प्रतिनिधित्व करे। इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए सबसे पहले 40 पेज की एक पुस्तिका ''नया तूफ़ान और उसका मुक़ाबला'' मजलिस तहक़ीक़ात से छप कर पब्लिक के सामने आई इस छोटी सी पुस्तिका का जो लेख है, वास्तव में वही मजलिस तहक़ीक़ात की भूमिका और आधारशिला है।

इस समय मजलिस तहक़ीक़ात की स्थापना के 65 वर्ष हो रहे हैं, इन बीते हुए वर्षों में लाखों की संख्या में किताबें छप कर देश विदेश में फैल चुकी हैं और पढ़ी जा रही हैं।

जिन उद्देशों के अन्तर्गत मजलिस तहक़ीक़ात की स्थापना हुई उन उद्देशों को पढ़ने के बाद हर पढ़ा लिखा व्यक्ति स्वीकार करते हुए पुष्टि करेगा कि उस समय के व्यापक फ़ितनों की काट और रद के लिए ऐसे इस्लामी दअ़वती केन्द्रों की स्थापना वक़्त की माँग और ज़रूरत थी।

मजलिस तहक़ीक़ात का उद्देश्यः—

० ईमान व विश्वास की बुन्यादें मन मस्तिष्क में नये सिरे से जमा सकें।

० उस बौद्धिक व वैचारिक बेचैनी और बिखराव को दूर करे जो पश्चिम की भौतिक संस्कृति व साहित्य ने विश्व व्यापी स्तर पर पैदा कर दिया है।

उस नये इरतिदाद (धर्म त्याग) का मुक़ाबला करे जो तूफ़ान और बाढ़ की तरह पूरी दुनिया में फैल गया है इन्हीं उद्देशों को ध्यान में रख कर इसकी स्थापना हुई।

मजलिस तहक़ीक़ात ने उर्दू, अरबी, अंग्रेज़ी और हिन्दी चारों भाषाओं में किताबें प्रकाशित की हैं जिनकी कुल संख्या लगभग चार सौ है, उनका विवरण इस प्रकार हैः—

उर्दू किताबें और पुस्तिकाएं— 182
अरबी किताबें और पुस्तिकाएं— 114
अंग्रेज़ी किताबें और पम्पलेट्स—80
हिन्दी पुस्तक और पुस्तिकाएं—21

अधिकतर किताबें वह हैं जिनके कई कई एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं बराबर उन किताबों की डिमाण्ड रहती है। मजलिस तहक़ीक़ात की स्थापना किसी व्यापारिक उद्देश्य से नहीं हुई बल्कि इन्सानियत की भलाई और इस्लाम की इल्मी, इस्लाही और दअ़वती दृष्टिकोण से हुई, इसी वजह से देश और विदेश के दूर दराज़ इलाक़ों में किताबें भेंट की गईं। मजलिस के पेशे नज़र इस्लाम की तबलीग़ व दअ़वत का जो बलन्द मक़सद है, उस मक़सद में मदद और इआ़नत मिल्लत के हर फर्द का फ़र्ज़ है, कि इन किताबों का परिचय कराया जाए और मदरसों, स्कूलों, कालिजों और लाइब्रेरियों में इन किताबों को पहुँचाया जाए ताकि कोई पढ़ा लिखा आदमी इन किताबों के अध्ययन से वंचित न रहे।

मजलिस की कुछ महत्वपूर्ण किताबों का परिचय प्रस्तुत है— अधिकतर पुस्तकें इस्लामी जगत के महान विचारक और लेखक हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 के क़लम से हैं, मौलाना मरहूम की किताबें एक समय में कई भाषाओं में छपती थीं, अरब पब्लिशर भी मौलाना की किताबें प्रकाशित करते थे।

मौलाना की सबसे अहम किताब जिस का इल्मी दुनिया में बड़ा चर्चा हुआ जिसकी वजह से मौलाना की बड़ी शोहरत हुई वह

अरबी किताब ''माज़ा ख़ासिरल आलम बिइनहितातिल मुस्लिमीन है'' जिसका उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवाद ''इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उरूज व ज़वाल का असर'' *"Islam and the World"* के नाम से प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार उर्दू में तारीख़ दअ़वत व अज़ीमत'' पाँच भागों में प्रकाशित हुई, इसका अंग्रेज़ी अनुवाद *"Savious of Islamic Sprit 4Vol."* यह किताब भी ओरिजनल अरबी में है।

मजलिस से मौलाना मन्जूर नोमानी रह0 की कुछ अंग्रेज़ी किताबें भी प्रकाशित हुईं।

1-Meaning & message of Tradition (vo. 1-5)
2-The Quran & you.
3-What Islam is.
4-Islamic Faith.
5-Preatiee.

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की महान और प्रसिद्ध किताबों में अरबी भाषा में ''अस्सीरतुन्नब्वियः'' का अंग्रेज़ी संस्करण ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' उर्दू और हिन्दी में ''नबी–ए– रहमत'' के नाम से मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम से प्रकाशित हुआ, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पर अब तक लिखी गई मशहूर एवं प्रमाणिक किताबों में इस किताब की गणना होती है, जो बड़ी मेहनत, खोज और शोध के बाद लिखी गई है और जिसमें इस विषय पर इससे पहले लिखी गईं सभी प्रमाणिक कितबों और प्रसिद्ध ग्रन्थों का निचोड़ आ गया है। 1976 ई0 से अब तक अरबी भाषा में क़ाहिरा (मिस्र) बैरूत (लेबनान) से पचासों संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, अरबी के अतिरिक्त दुनिया की कई ज़बानों में इसका अनुवाद हुआ, यही वह किताब है जिस पर लेखक को 1980 ई0 में 14वीं शताब्दी जिहरी के किंग फ़ैसल एवार्ड से सम्मानित किया गया था।

मज़लिसे तहक़ीक़ात व नशरियात की अन्य हिन्दी पुस्तकें:–
लेखक हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0।

० दस्तूरे हयात (जीवन का पथ प्रदर्शक)

अल्लाह की किताब और हदीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल0 की रोशनी में एक सच्चे मुसलमान की जीवनी की पूर्ण कार्य पद्यति, आस्था व विश्वास आदि का एक आदर्श संकलन।

० सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन।

इस पुस्तक में इस्लाम और मानव सभ्यता पर प्रकाश डाला गया है जो शिक्षित वर्ग के लिए उदार व सत्य प्रिय, न्यायप्रिय होने के साथ विशाल दृष्टिकोण रखती है।

० भारतीय मुसलमान एक दृष्टि में।

वर्तमान भारतीय मुसलमान का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिचय, त्यौहारों, रीति रिवाजों आचार व्यवहार तथा उसकी सामूहिक धर्म व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन।

o मदीने की डगर–

लेखक के विभिन्न व्याख्यानों और सीरत के निबन्धों का संकलन है।

o मानवता का संदेश–

वह पाँच प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण भाषण जिनके द्वारा मानव जाति की आत्मा को झिंझोड़ा गया है, वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण जिसके बिना वर्तमान समाज में व्यापक असंतोष तथा भ्रष्टाचार का समाप्त होना असंभव है।

o मानवता का स्तर–

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 के पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह जिसमें यह बताया गया है कि हमारी संस्कृति तथा जीवन में आधारभूत त्रुटियाँ एवं कमज़ोरियाँ क्या हैं, हम उन्हें किस प्रकार दूर कर सकते हैं।

o नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली।

o हिन्दुस्तानी मुसलमानों से साफ़ साफ़ बातें।

o इस्लाम मुकम्मल दीन, मुस्तक़िल तहज़ीब।

❖❖❖

स्वास्थ्य

अस्थमा, अल्जाइमर और गठिया

इदारा

चिकित्सा विज्ञान ने जहाँ अपने खोज के दम पर ज़्यादातर बीमारियों के इलाज का तरीका खोज लिया है, लेकिन कुछ बीमारियों के मामले में आंशिक सफलता मिली है, तो किसी मामले में वह सफलता से कोसों दूर हैं। उन्हीं में यह बीमारियां भी हैं, जो हो जाएं तो जिंदगी भर इन्हें ढोना पड़ता है। ये स्थिति पीड़ा दायक तो है लेकिन इंसान उसके सामने लाचार है। इस प्रकार की बीमारियों के बारे में जानना और समय रहते उनसे बचाव के उपाय अपनाना बहुत जरूरी होता है। कोशिश करनी चाहिए कि इस प्रकार की लाइलाज बीमारियों से बचा जा सके।

अस्थमा:-

साँस की नलियों में जलन, सिकुड़न या सूजन की स्थिति से ये रोग पैदा होता है, इसमें ज़्यादा बलग़म बनता है। साँस लेने में कठिनाई होती है। दमा मामूली हो सकता है या इसके होने पर रोज़मर्रा के काम करने में समस्या आ सकती है। कुछ मामलों में इसकी वजह से जानलेवा दौरा भी पड़ सकता है। दमा के कारण साँस लेने में कठिनाई, सीने में दर्द, खाँसी और साँस लेने में घरघराहट की आवाज़ आने लगती है। इसके लक्षण कभी–कभी ज़्यादा गम्भीर हो जाते हैं। इसका इलाज करने का कोई तरीक़ा नहीं है। अस्थमा की संभावना को रोकने के तरीक़े ज़रूर हैं।

अल्जाइमर:-

इसे 'भूलने का रोग' कहते हैं। इसका नाम आलोइस अल्जाइमर पर रखा गया है, जिन्होंने सबसे पहले इसका विवरण दिया। इस बीमारी के लक्षणों में याददाश्त की कमी होना, निर्णय न ले पाना और बोलने में दिक़्कत आना है। रक्तचाप, मधुमेह, आधुनिक जीवनशैली के अलावा कई बार सर में चोट से भी उसके होने की आशंका रहती है। अमूमन 60 वर्ष की उम्र के आसपास होने वाली इस बीमारी का फ़िलहाल कोई स्थायी इलाज नहीं है। हालांकि बीमारी के शुरुआती दौर में नियमित जांच और इलाज से इस पर काबू पाया जा सकता है, इसमें दिमाग़ की कोशिकाओं का एक दूसरे से जुड़ाव और ख़ुद कोशिकाओं के कमज़ोर और खत्म होने की वजह से याददाश्त और अन्य महत्वपूर्ण दिमाग़ी काम करने की क्षमता नष्ट हो जाती है।

गठिया:-

देश में ये बहुत सामान्य रोग है। इसे जड़ से दूर करने का इलाज नहीं है लेकिन इसमें कमी ज़रूर लायी जा सकती है। ये दरअसल हड्डियों के जोड़ों में सूजन के कारण होता है। इसमें दर्द और जकड़न की स्थितियां बनती हैं। उम्र के साथ बढ़ती हैं। गठिया कई प्रकार का होता है। हर एक का कारण अलग–अलग हो सकता है जैसे हड्डियों में घिसाव, संक्रमण और कोई गंभीर रोग दवाओं, फिजियोथेरेपी या कभी कभी आप्रेशन से लक्षणों में कमी लायी जा सकती है और रोगी की हालत सुधारी जा सकता है। ◆◆

डॉ० कौसर उस्मान को ब्रायन स्कॉलरशिप मिलने पर दिली मुबारकबाद

केजीएमयू के मेडिसिन विभाग के प्रो0 कौसर उस्मान को यूके की प्रतिष्ठित ब्रायन चैपमेन स्कॉलरशिप से नवाजा गया है। यह अवॉर्ड 13–05–24 को उन्हें इडनबर्ग के रॉयल कॉलेज ऑफ फिजीशियन में आयोजित एक समारोह में दिया गया। जीरियाट्रिक मेडिसिन के क्षेत्र में बुजुर्गों की सेहत पर किये गये काम को लेकर प्रो0 कौसर उस्मान को यह सम्मान दिया गया है। भारत से इस सम्मान के लिए अकेले उनका चयन किया गया है।

''सच्चा राही'' अपनी और अपने पाठकों की ओर से दिली मुबारकबाद पेश करता है। ◆◆

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

तुर्किये ने इस्राइल संग व्यापार रोका:-

तुर्किये ने इस्राइल के साथ सभी तरह के व्यापार किये जाने पर रोक लगा दी है। तुर्किये के व्यापार मंत्रालय का कहना है कि जब तक गाजा में बिना किसी बाधा के पर्याप्त मदद नहीं दी जाती है, तब तक फैसला लागू रहेगा। पिछले साल दोनों के बीच 6 अरब डॉलर का व्यापार हुआ था। इस्राइल के विदेश मंत्री ने तुर्किये के राष्ट्रपति को तानाशाह बताया।

29वीं बार एवरेस्ट फतेह कर रीता ने तोड़ा अपना रेकॉर्ड:-

नेपाल के पर्वतारोही गाइड कामी रीता शेरपा (54) ने 29वीं बार दुनिया के सबसे ऊँचे पर्वत माउंट एवरेस्ट को फतेह कर अपना ही रेकॉर्ड तोड़ दिया। कामी पहली बार मई 1994 में एवरेस्ट के शिखर पर पहुंचे थे। उन्होंने मई 2023 में एक हफ़्ते के भीतर 27वीं और 28वीं बार इसे फतेह किया था। नेपाल के ही पसांग दावा शेरपा 27 बार एवरेस्ट पर चढ़ चुके हैं।

विदेश से पैसा भेजने में सबसे आगे भारतीय, रेकॉर्ड:-

संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी ने कहा है कि भारत को 2022 में 111 अरब डॉलर का धन प्रवासियों से मिला है, जो दुनिया में सबसे अधिक है।

इसी के साथ भारत 100 अरब डॉलर के आँकड़े तक पहुंचने और इसे पार करने वाला पहला देश बन गया है। ''इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन' (आईओएम) ने मंगलवार को जारी अपनी रिपोर्ट में कहा कि 2022 में धन हासिल करने वाले शीर्ष पाँच देशों में भारत, मेक्सिको, चीन, फिलिपींस और फ्राँस शामिल हैं। इससे पहले तक चीन भारत के बाद ऐतिहासिक रूप से इस तरह का धन प्राप्त करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश रहा है।

रोज़ाना लाखों का सोना उगल रहा अंटार्कटिका का यह ज्वालामुखी:-

अंटार्कटिका के 138 सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक माउंट एरेबस रोजाना लाखों रूपये का सोना उगल रहा है। इस ज्वालामुखी से रोजाना निकलने वाली धूल में सोने के कण पाए गये हैं। ज्वालामुखी से रोजाना निकलने वाले सोने की कीमत 5 लाख रूपये से ज़्यादा आंकी गई है। न्यूयॉर्क पोस्ट ने आईएफएल साइन की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि नासा के वैज्ञानिकों ने ज्वालामुखी की धूल का विश्लेषण कर सोना पाए जाने की पुष्टि की है। उन्होंने कहा है कि इस धूल में रोज़ाना करीब 80 ग्राम क्रिस्टलीकृत सोने का पता लगाया है। माउंट एरेबस अंटार्कटिका के डिसेप्शन द्वीप में स्थित है, जो इस क्षेत्र के दो सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है।

बिहार में महिला ने 5 बच्चों को दिया जन्म:-

बिहार के किशनगंज में एक महिला ने एक साथ 5 बच्चों को जन्म दिया। महिला का नाम ताहिरा आलम है।

पूरा मामला किशनगंज जिले के पोठिया प्रखण्ड के रजा नर्सिंग होम का है। महिला ने बताया कि जब मैं दो महीने की गर्भवती थी तब मुझे पता चला कि मेरे गर्भ में चार शिशु हैं। यह बात सुनकर मैं घबरा गई थी। बाद में पता चला कि उनकी संख्या पाँच है। डॉक्टर ने बताया कि जच्चा–बच्चा दोनों स्वस्थ हैं।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/06/2024 ________ تاریخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअत पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

आमीन।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं **08736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 04

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

DESIGNED BY SAAD HAMDAMWALA © 9860448783

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3